جہاد کرنے کی تربیت دی ہے جو انصاف کے خلاف ہوں۔ اسی بنیاد پر مہا بھارت کی جنگ کوروؤں اور پانڈوؤں کے درمیان ہوئی۔

اگر ہم مذہبی طور پر گیتا جی کے فلسفے کو جانا ہوتا تو ہم آجکل اتنے ناخوش نظر نہیں آتے۔ ہم پر امیری غریبی، اونچ نیچ اور چھوت چھات پرستی کی لعنت سوار نہیں ہوتی۔ اگر ہمیں اس اندھیرے سے نکلنا ہے تو ہمیں خود میں نیک طریقوں سے گیتا جی کو عملی طور سمجھنے اور اس پر عمل کرنے کا مادہ پیدا کرنا پڑے گا۔ صرف بھگوت گیتا کا فلسفہ یاد رکھنے سے یا بحث ومباحثہ کرنے سے کچھ حاصل نہیں ہو سکتا ہے گیتا جی کا ترجمہ دنیا کی مختلف زبانوں میں ہو چکا ہے اسی کے علاوہ مہاتما گاندھی، ڈاکٹر رادھا کرشنن۔ ونوبا بھاوے۔ خواجہ دل محمد وغیرہ وغیرہ نے گیتا جی کا شاندار طریقے سے ترجمہ کیا ہے۔

بھگوان شری کرشن

آنند کند
کے
جیون سے

اس پرتھوی کا بوجھ اتارنے کی سامرتھ ہمکو اور آپ کو نہیں ہے اس کا دکھ چھڑانے والے آدی پرش بھگوان ہی ہے بھگوان نے متسیہ روپ دھر کر شنکھاسر دیت کو مار کر ویدوں کو سمندر سے باہر نکالا اور کچھپ روپ ہو کر مندراچل پہاڑی اپنی پیٹ پر رکھ کر سمندر کو چودہ رتن نکالے اور ورا روپ دھارن کر کے زمین کو پاتال سے باہر نکالا پھر ست جیوں برہمنوں اور گئو رکھشا کرنے کے واسطے باون روپ ہو کر راجہ بل سے پرتھوی کا دان کیا اور پھر پرشرام اوتار سے کر سب چھتریوں کو مار ڈالا اور ساتوں دیپ کی پرتھوی ان سے چھین کر براہمنوں کو دان کر دی۔ شری رام چندر جی نے راون اور دوسرے راکھشوں کو ختم کیا اور اس طرح پرتھوی پر اتیا چار جو ہو رہا تھا ختم کیا۔ بھگوان شری کرشن جی بھی اسی سلسلہ کی ایک کڑی ہے یعنی جب بھگوان نے دیکھا کہ کنس نے دیوکی اور بسدیو جی۔ ست جنوں اور بھگوان کے بھگتوں کو پریشانی دکھ دیا تو وہ بھی شری کرشن مہاراج کا روپ دھر کر کنس اور اس کے ہمراہی راکھشس سے بدلہ لینے کے لیے آئے۔

کنس کوئی فرضی آدمی نہیں ہے بلکہ تاریخ کے ایک بڑے باب کا مرکز کافی دیر بنے رہا۔ راجہ ایک متھرا نگری کا راجہ تھا اس کے دو بیٹے دیوک اور اگرسین تھے۔ اگرسین کا بیٹا کنس تھا۔ باپ کو بھگوان کا نام لینے پر بیچنی ہی سے کوسا اور بڑا ہونے پر اسکو تخت سے اتارا۔ رعایا کو تکلیف دی۔ اگرسین کے بھائی کی لڑکی دیوکی اور اس کے پتی بسدیو جی کو قید میں رکھا اور کافی تکلیفیں دیں اس لیے کہ راجہ کنس نے کسی سے یہ سنا تھا کہ دیوکی کے بطن سے جو لڑکا پیدا ہوگا وہی اس کا یعنی راجہ کنس کا مارنے والا ہوگا اس نے دیوکی کے چھ بچے کنس نے پیدا ہوتے ہی مار ڈالے۔ یہ ایک ظالم تھا اور اس ظلم کو ختم کرنے کے لیے شری کرشن نے بھی دیوکی کے ہاں جنم لیا اور پیدا ہوتے ہی بسدیو جی نے شری کرشن جی کو کنس سے بچا کر گوکل کیا اور وہاں جسودا جی اور نند جی کے ہاں سے ایک لڑکی لا کر دیوکی جی کے پاس رکھ لی جسودا جی کو یہ لڑکی بھی اسی دن پیدا ہوئی تھی جس دن دیوکی جی کے ہاں شری

شری کرشن جی نے جنم لیا۔
اب بھگوان شری کرشن...
لیلا گوکل میں شروع ہوتی ہے کنس...
بات کا جب پتہ لگتا ہے کہ شری...
گوکل پہنچ گئے ہیں تو وہ اپنے راکھ...
راکھشنی پوتنا کو وہاں پتہ لگانے...
کرتے ہیں یعنی اس کو مارنے کے...
۱۰ بچے کال سے بچ جاتے ایک...
کنس کی کوشش جاری ہے د...
سے شری کرشن جی نے اپنے بال...
کہ جسودا جی کو پیار ہے ہیں...
جب شیام سندر شری کرشن...
اٹھا لیا اور منہ چوم کر دودھ پلانے...
کرشن بھگوان نے اس کی چھاتی...
طرح دودھ پینا شروع کیا کہ د...
گئی پر سنکر کنس نے کے بعد...
ترناورت ماچھس اور کسی کو ایک...
بہانے روانہ کیا مگر شری کرشن...
کوئی بچ کے واپس نہیں گیا۔
ادھر سے جسودا جی...
کی لیلا سے بے خبر ہو کر ماں کی...
بیٹے کے لئے پریشان ہوتی تھی کبھی...
کو اوکھل سے باندھا اور کبھی اسکو...

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व प्रथमअध्याय तैंलैके षष्ठअध्यायपर्यंत प्रथमषट्कविषे त्वंपदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और सप्तमअध्यायतैंलैके द्वादशेअध्यायपर्यंत द्वितीयषट्कविषे तत्पदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिन शोधित तत्त्वंपदार्थकाअभेदरूप महावाक्यकेअर्थकूं कथनकरणेहारा तथातत्त्वज्ञानहैप्रधानाजिसविषे ऐसाजो त्रयोदशअध्यायतैंआदिलैकेअष्टादशे अध्यायपर्यंत तृतीयषट्कहै तिसतृतीयषट्ककाआरंभकहेहैं ॥ तहांपूर्व द्वादशेअध्यायविषे (तेषामहंसमुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागराद्भवामि) इसवचनकरिके श्रीभगवान्नैं आपणेविषे अधिकारीजनोंका मृत्युसंसारसागरतैंउद्धारकर्त्तापणा कथनकऱ्याथा ॥ सो आत्मविषयकअज्ञानरूपमृत्युतैं इनअधिकारीजनोंकाउद्धरण आत्माकेज्ञानतैंविना संभवतानहीं ॥ किंतु (तरतिशोकमात्मवित् ॥ तरत्याविद्यांविततांहृदियस्मिन्निवेशिते) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन आत्माकेज्ञानतैंहीं अविद्यारूपअज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरेहैं ॥ यातैं जिसप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै तिसमृत्युसंसारकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथा जिसतत्त्वज्ञानकरिकैयुक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुणों वालेसंन्यासी पूर्वद्वादशेअध्यायविषेवर्णनकरेथे ॥ सो आत्मतत्त्वज्ञान अबी अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ और सोतत्त्वज्ञान अद्वितीयपरमात्माकेसाथि जीवात्माकेअभेदकूंहींविषयकरेहै ॥ काहेतैं जन्ममरणतैंआदिलैकेजितनैंकीअनर्थहैं तिनसर्वअनर्थोंका जीवब्रह्मकाभेदभ्रमहीं कारणहै ॥ तहांश्रुति ॥ (मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतभावकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ऐसेभेदभ्रमकीनिवृत्ति जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंविनाहोवैंनहीं ॥ किंतु जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंहीं ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेयहशंकाहोवैहै ॥ मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंकर्ताहूं मैंभोक्ताहूं इसप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणियोंविषेहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातौं सुखदुःखादिरूपसंसारवालेहैं ॥ तथा शरीरशरीरविषे भिन्नभिन्नहैं ॥ जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहींआत्माहोवै तौं एकशरीरविषेसुखदुःखकेअनुभवहुए सर्वशरीरोंविषे तासुखदुःखकाअनुभव होणाचाहीये सोहोतानहीं ॥ यातैं शरीरशरीरविषे आत्मा भिन्नभिन्नहै ॥ और परमात्मादेवतौं तासुखदुःखादिरूपसंसारतैंरहितहै तथा एकहै ॥ ऐसेअनेकसंसारीजीवोंका एकअसंसारीपरमात्माकेसाथिअभेद संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ सो सुखदुःखादिरूपसंसार तथाभिन्नपणा अविद्याकल्पितअनात्मवस्तुकेहीं धर्महैं ॥ जीवात्माका संसारीपणा तथाभिन्नपणा धर्महैनहीं याप्रकारकाविवेचन अवश्यकऱ्याचाहीये ॥ तिसविवेचनकेअर्थ देह इंद्रिय अंतःकरण प्राण इत्यादिरूपक्षेत्रोंतैं भिन्नकरिकै क्षेत्रज्ञनामाजीवात्मापुरुष तिनसर्वक्षेत्रोंविषेएकहींहै तथानिर्विकारहै इसअर्थकेप्रतिपादनकरणेवासतै इसत्रयोदशेअध्यायविषे क्षेत्रक्षेत्रज्ञका विवेचनकरेहैं ॥ तहांपूर्व सप्तमअध्यायविषे श्रीभग

वान्नें जा भूमिआदिकअष्टप्रकारकीअपरानामाप्रकृति क्षेत्ररूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तथा जीवरूप पराप्रकृति क्षेत्रज्ञरूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तिसीक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूप दोनोंप्रकृतियोंकेस्वरूपकूं भिन्नभिन्नकरिकैनिरूपणकरताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ १ ॥ इदम् । शरीरम् । कौंतेय । क्षेत्रम् । इति । अभिधीयते । एतत् । यः । वेत्ति । तं । प्राहुः । क्षेत्रज्ञम् । इति । तद्विदः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन यह शरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै और इसक्षेत्रकूं जो जानेहै तिसकूं क्षेत्रकेजानणेहारेपुरुष क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकौंतेय अर्थात् हेकुंतीमाताकेपुत्रअर्जुन ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंसहित तथाचतुष्टयअंतःकरणसहित तथापंचप्राणोंसहित जोयह सुखदुःखकेभोगकाआयतनरूप शरीरहै ॥ सोशरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ अब क्षेत्रशब्दकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां अविद्याकरिकै जो आत्मक्षयकरेहै तथाविद्याकरिकै आत्माकूं रक्षणकरेहैं ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकैयुक्तपुरुष क्षयकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूं जन्ममरणादिकअर्थरूपक्षयतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवासर्वकालविषे दीपशिखाकीन्यांई जोआप क्षयकूं प्राप्तहोता जावैहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा सुखदुःखादिरूपफलकीउत्पत्तिविषे जो लोकप्रसिद्धभूमिरूपक्षेत्रकीन्यांई आचरणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै इति ॥ ऐसे इसशरीररूपक्षेत्रकूं जो जानेहै ॥ अर्थात् इसशरीररूपक्षेत्रविषे जो अहंममअभिमानकरेहै ॥ तिसकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कृषीकरणेहारा कृषीवलपुरुष भूमिरूपक्षेत्रकेफलकाभोक्ताहोवैहैं ॥ तैसे यहजीवात्माभी इससंघातरूप क्षेत्रकेसुखदुःखरूपफलका भोक्ताहोवैहैं ॥ यातैं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कौन कथनकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तद्विदः इति) हेअर्जुन यहक्षेत्र असत्जडदुःखरूपहै ॥ और यहक्षेत्रज्ञआत्मा सत्चित्आनंदरूपहै ॥ इसप्रकारतैं इस क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेभेदकूं जानणेहारे जेविवेकीपुरुषहैं ॥ तेविवेकीपुरुषहीं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञइसनामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ इहांकिसीकमूलपुस्तकविषे (श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसश्लोकतैंपूर्व अर्जुनकाप्रश्नरूप यहश्लोकहै (अर्जुनउवाच ॥ प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच ॥ एतद्वेदितुमिच्छामिज्ञानंज्ञेयंचकेशव) अर्थयह ॥ हेकेशव प्रकृतिक्याहै तथापुरुषक्याहै तथाक्षेत्रक्याहै तथाक्षेत्रज्ञक्याहै तथाज्ञानक्याहै तथाज्ञेयक्याहै ॥ इससर्वअर्थके

जानंणेकी मैंइच्छाकरताहूं ॥ आपकृपाकरिकै सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ परंतु यहश्लोक श्रीभाष्यकारोंतैआदिलेके किसीभीटीकाकारनैं ग्रहणक न्यानहीं ॥ यातैं यह जान्याजावैहै ॥ यहअर्जुनकेप्रश्नकाश्लोक पश्चात् किसीविद्वान्नैं पायाहै इसीकारणतैं इसत्रयोदशेअध्यायकेप्रारंभविषे यहश्लोक हमनैं लिख्यानहीं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार देहइंद्रियअंतःकरणादिरूपक्षेत्रतैंविलक्षण स्वप्रकाशक्षेत्रज्ञकूंकथनकरिकै अबतिसक्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकाजो असंसारीपरमात्माकेसाथि एकतारूप पारमार्थिकस्वरूपहै तिसस्वरूपकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञं । च । अपि । मां । विद्धि । सर्वक्षेत्रेषु । भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । ज्ञानं । यत् । तत् । ज्ञानं । मतं । मम ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत पुनः सर्वक्षेत्रोंविषेस्थित क्षेत्रज्ञकूं तूं मैंअद्वितीयब्रह्मरूप हीं जान ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंका जो ज्ञानहै सो ज्ञानहीं मैंपरमेश्वरकूं अभिमतहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभारत अर्थात् हेभरतराजाकेवंशाविषेउत्पन्नहूआअर्जुन ॥ अथवा आत्माकारवृत्तिकानाम भाहै ॥ ताआत्माकारअखंडवृत्तिविषे जोसर्वदा रमण करेहै अथवा ताअखंडवृत्तिविषे जो सर्वदा प्रीतिवालाहै ताकानाम भारतहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानविषेप्रीतिवालाअर्जुन ॥ पूर्वउक्त देहइंद्रियादिसंघातरूप सर्व क्षेत्रोंविषे अधिष्ठानरूपकरिकैस्थित जोएकक्षेत्रज्ञहै ॥ जोक्षेत्रज्ञ स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै तथानित्यहै तथाविभुहै तथा अविद्याकरिकैआरोपितहैंकर्तृत्वभोक्तृत्वादिकधर्म जिसविषे ॥ ऐसेतिसक्षेत्रज्ञकूं तूं अर्जुन तिस अविद्याकल्पितरूपका परित्यागकरिकै मैंपरमेश्वररूप जान ॥ अर्थात् अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैं रहित तिसप्रत्यक्आत्मारूपक्षेत्रज्ञकूं तूं असंसारीअद्वितीयब्रह्मानंदरूप जान ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥) अर्थ यह ॥ यहजीवात्माब्रह्मरूपहै॥ तथा मैंब्रह्मरूपहूं ॥ तथा सोसतब्रह्म तूंहैं ॥तथा यहआनंदरूप प्रज्ञाननामाजीवात्मा ब्रह्मरूपहै इति ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्त क्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका जोज्ञानहै ॥ अर्थात् मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं यहक्षेत्रतौं रज्जुसर्पकीन्यांई मिथ्यारूपहै ॥ और तिसक्षेत्ररूपभ्रमकाअधिष्ठानहोणेतैं यहक्षेत्रज्ञनामा आत्मा परमार्थसत्यहै ॥ याप्रकारतैं जो तिसक्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका ज्ञानहै ॥ सोईहींज्ञान मोक्षकासाधनहोणेतैं मैंपरमेश्वरकूं ज्ञानतैंभिन्न दूसरेजितनैंकी लौकिकवैदिकज्ञानहै तेसर्वज्ञान ताअविद्याके विरोधीहैंनहीं ॥ यातैं तेसर्वज्ञान अज्ञानरूपकरिकैसंमतहै ॥ अर्थात् तिसीज्ञानकूं मैंपरमेश्वर अविद्याकाविरोधी प्रकाशरूप मानताहूं॥इसप्रकारकेज्ञानरूपहींहै इति॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (क्षेत्रज्ञंचापि) इसवचनविषे जो चकारहै॥ताचकारकरिकै पूर्वउक्तक्षेत्रकाभी ग्रहणकर्‍याहै॥

अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप तथाक्षेत्ररूप मैंपरमेश्वरकूंहीं तूं जान ॥ तहां क्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकी ब्रह्मरूपताविषेतौं पूर्वहीं श्रुतिरूपप्रमाण कथनकऱ्याहै ॥ और क्षेत्रकीब्र ह्मरूपताविषेतौं (ब्रह्मैवेदंसर्वं सर्वंखल्विदंब्रह्म) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै संक्षेपतैंकथनकऱ्ये हुएअर्थकूं अब विस्तारतैंकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्चयद्विकारियतश्चयत् ॥ सचयोयत्प्रभावश्चतत्समासेनमेशृणु ॥ ३ ॥ तत् । क्षेत्रं । यत् । च । यादृक् । च । यद्विकारि । यतः । च । यत् । सः । च । यः । यत्प्रभावः । च । तत् । समासेन । मे । शृणु ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोशरीररूप क्षेत्र जिसस्वभाववालाहै तथा जिसइच्छादिकधर्मवालाहै तथा जिसइंद्रियादिकविकारोंवालाहै तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै तथा सोक्षेत्रज्ञ जिसस्वभाववालाहै तथा जिसप्रभाववालाहै सोक्षेत्रज्ञकास्वरूप मेरेवचननतैं तूं संक्षेपकरिकै श्रवणकर ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै कथनकऱ्याजो देह इंद्रिय अंतःकरण इत्यादिक जडवर्गरूपक्षेत्रहै ॥ सोक्षेत्र आपणेस्वरूपकरिकै जिस जड दृश्य परिच्छिन्नआदिकस्वभाववालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इच्छाद्वेषादिक धर्मोंवालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इंद्रियादिकविकारोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा (यतश्चयत्) इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ सोक्षेत्रजिसप्रकृतिपुरुषकेसंयोगतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा जिस स्थावरजंगमादिकभेदकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ इतनैंकरिकैक्षेत्रकेस्वरूपका विचारकऱ्या ॥ अब क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपका विचार करेहैं (सचइति) हेअर्जुन (एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञइतितद्विदः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो क्षेत्रज्ञहै ॥ सोक्षेत्रज्ञभी आपणेस्वरूपते जिसस्वप्रकाशचैतन्य आनंदस्वभाववालाहै ॥ तथा उपाधिकृत जिनशक्तिरूपप्रभावोंवालाहै इति ॥ तिनसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टक्षेत्रकेयथार्थस्वरूपकूं तथाक्षेत्रज्ञकेयथार्थस्वरूपकूंतूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर ॥ अर्थात् तिस क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं श्रवणकरिकै तूं निश्चयकर इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वश्लोकविषे आपनैं यहवचन कह्याथा ॥ तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं तूं मेरेवचननतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर इति ॥ सोयहआपका कहणा तबी संभवै ॥ जबी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकऱ्याहोवै ॥ काहेतैं जोअर्थ पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकरीताहै ॥ सोअर्थहीं पश्चात् संक्षेपकरिकैकथन कऱ्याजावैहै ॥ पूर्व विस्तारतैंनहींकथनकऱ्येहुएअर्थका संक्षेपकरिकैकथन संभवतानहीं ॥ सोइसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिनोंनैं विस्तारकरिकैकथनकऱ्याहै ॥

जिस विस्तारकरिकैकथनकऱ्येहुएअर्थका आप अबी संक्षेपकरिकैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिविषे तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषयप्रीतिकेउत्पन्नकरणेवासतै तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकीस्तुतिकरताहुआ कहेहै ॥

(मू०श्लो०) ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैःपृथक् ॥ ब्रह्मसूत्रपदैश्चैवहेतुमद्भिर्विनिश्चितैः॥ ४ ॥ ऋषिभिः । बहुधा । गीतं । छंदोभिः । वि विधैः । पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैः । च । एव । हेतुमद्भिः । विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियोंनैं बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै तथाबहुतप्रकारके ऋगादिकेवेदोंनैंभी भिन्नभिन्नकरिकै कथनकऱ्याहै तथा युक्तियोंवाले तथानिश्चितअर्थवाले ऐसेंब्रह्मसूत्रपदोंनैं भी सोस्वरूप बहुतप्रकारतैकथनकऱ्याहै ॥४॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियोंनैंभी योगशास्त्रविषे धारणाध्यानकाविषयरूपकरिकै बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे योगशास्त्रकरिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या ॥ तथा विविधछंदोंनैंभी सोस्वरूप पृथक्पृथक्करिकै निरूपणकऱ्याहै ॥ अर्थात् नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेऋगादिकवेदोंके मंत्रहैं तथाब्राह्मणहैं तिनोंनैंभी भिन्नभिन्नकरिकै सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिके श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे कर्मकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै॥ तहां ब्रह्म इसपदका सूत्र इसपदकेसाथि तथा पद इसपदकेसाथि अन्वयकरणेतैं ब्रह्मसूत्र ब्रह्मपद यहदोप्रकारकेवचन सिद्धहोवैहैं ॥ तहां जिनवाक्योंनैं किंचित् मात्रव्यवधानकरिकैब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै जैसे (यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंतितद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जिसतैं यहसर्वभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा उत्पन्नहुएतेसर्वभूत जिसकरिकै जीवतेहैं ॥ तथा विनाशकूंप्राप्तहुएतेसर्वभूतजिसविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं सोईहींब्रह्महै इति ॥ इत्यादिक ब्रह्मकेतटस्थलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे जेउपनिषदवाक्यहैं तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै ॥ और जिनवाक्योंनैं साक्षात्हीं ताब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मपदहै ॥ जैसे ब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म) इत्यादिक उपनिषदवाक्यहैं ॥ ऐसे ब्रह्मसूत्ररूपवाक्योंनैं तथाब्रह्मपदरूपवाक्योंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैंनिरूपणकऱ्याहै कैसेहैं तेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्य हेतुमतहैं ॥ अर्थात् इष्ट अर्थकेसाधकअनेकयुक्तियोंकेप्रतिपादकहैं ॥ तेयुक्तियांयहहैं ॥ छांदोग्यउपनिषदविषे उद्दालकऋषिनैंश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ (सदेवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्रूपहोताभया ॥ सोसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया

इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै पश्चात् यहवचनकह्याहै ॥ (तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसदजायत) ॥ अर्थयह ॥ केईकवादीतौं ऐसेकहेहैं ॥ यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्होताभया ॥ सोअसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ तिसअसत्कारणतैं यहसत्कार्य उत्पन्नहोताभया इति ॥ इसवचनकरिकै नास्तिकोंकेमतकाकथनकरिकै तिसतैं अनंतर सोउद्दालकऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ (कुतस्तुखलुसौम्यैवंस्यादितिहोवाचकथमसतःसज्जायेत) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहनास्तिकोंकाकहणा कैसेसंभवैगा ॥ किंतु नहींसंभवैगा ॥ जिसकारणतैं असत्कारणतैं सत्कार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भी होंतीनहीं ॥ जोकदाचित् असत्तैंभी सत्कीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं असत्वंध्यापुत्रतैंभी सत्पुत्रकीउत्पत्तिहोणीचहीये ॥ और होती नहीं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकूंप्रतिपादनकरणेहारे तेब्रह्मसूत्रपदरूपवचनहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेब्रह्मसूत्रपदरूपवचन ॥ विनिश्चितहैं ॥ अर्थात् उपक्रम उपसंहारवाक्योंकीएकवाक्यताकरिकै संशयतैंरहितअर्थकेप्रतिपादकहैं ॥ इसप्रकारकेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्योंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपण कऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषे ज्ञानकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा निरूपणकऱ्या॥ इसप्रकार पूर्व वसिष्ठादिकऋषियोंनैं तथाऋगादिकवेदोंकेमंत्रोंनैं तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैं अत्यंतविस्तारतैंकथनकऱ्याजो क्षेत्रक्षेत्रज्ञका यथार्थस्वरूपहै ॥ तिसीस्वरूपकूं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेतांई संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर इति ॥ अथवा (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनविषे ब्रह्मसूत्रहोवैं तेहींपदहोवैं याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरणा ॥ तहां (आत्मेत्येवोपासीत) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्मामैंहूं याप्रकारकाचिंतनकरे ॥ इत्यादिकवाक्यतौं विद्यासूत्र कहेजावैहैं ॥ और (नसवेदयथापशुः) ॥ अर्थयह ॥ आपणेआत्मातैं देवताकूंभिन्नमानिकै जोपुरुष तादेवताकीउपासनाकरेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष पशुकीन्यांई किंचित्मात्रभी जानतानहीं ॥ इत्यादिकवचनतौं अविद्यासूत्रकह्येजावैहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनकरिकै (जन्माद्यस्ययतः) इत्यादिकवेदांतसूत्रोंकाग्रहणकऱ्याहैंइति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपजानणेविषे अर्जुनकीरुचि उत्पन्नकरिकै अब श्रीभगवान् तिस अर्जुनकेतांई दोश्लोककरिकैं प्रथम क्षेत्रकास्वरूप कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच ॥ इंद्रियांणिदशैकंचपंचचेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः ॥ एतत्क्षेत्रंसमासिनसविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ महाभूतानि । अहंकारः । बुद्धिः । अव्यक्तम् । एव । च । इंद्रियांणि । दश । एकं । च । पंच । च । इंद्रियगोचराः ॥ इच्छा । द्वेषः । सुखं । दुःखं । संघातः । चेतना । धृतिः । एतत् । क्षेत्रं । समासेन ।

सविकारम् । उदाहृतम् ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि तथा अव्यक्त तथादश श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा एकमन तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयशब्दादिकपंच तथा इच्छा द्वेष सुख दुःख संघात चेतना धृति यह सर्व विकारस हित संक्षेपकरिकै क्षेत्ररूप कहेहैं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पृथिवी जल तेज वायु आकाश यह जे पंचमहाभूतहै ॥ तथा तिनपंचमहाभूतोंकाकारणरूप जोअभिमानलक्षण अहंकारहै ॥ तथा तिसअहंकारका कारणरूप जोअध्यवसायलक्षण महत्तत्त्वनामाबुद्धिहै ॥ तथा तिसमहत्तत्त्वनामाबुद्धिकाकारणरूप तथासत्त्वरजतमगुणात्मक ऐसाजो प्रधानरूप अव्यक्त है ॥ जोअव्यक्त सर्वकाकारणरूपहींहै ॥ किसीकाभी कार्यरूपहैनहीं ॥ यह महाभूतोंतें आदिलेकेअव्यक्तपर्यंत अष्टप्रकारकीप्रकृति कहीजावैहै ॥ यहअर्थ सांख्यमतकेअनुसार कथनकऱ्या ॥ अब वेदांतमतकेअनुसारअर्थकरेहैं ॥ तहां अव्यक्तशब्दकरिकैतौं अनिर्वचनीय अव्याकृतका ग्रहणकरणा जिसअव्याकृतकूं (ममप्मायादुरत्यया) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें मायानामा परमेश्वरकीशक्तिरूप कथनकऱ्याहै ॥ और बुद्धिशब्दकरिकैतौं सृष्टिकेआदिकालविषे स्रष्टव्यप्रपंच विषयक मायाकावृत्तिरूप ईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकैतौ तिसईक्षणतैंअनंतरभावी तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकेसंकल्पका ग्रहणकरणा ॥ तिससंकल्पतैंअनंतर आकाशादिकक्रमकरिकै पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति ग्रहणकरणी इति ॥ और सांख्यशास्त्रकरिकैसिद्धजे अव्यक्त महत्तत्व अहंकार यहतीन तत्त्वहैं तेतीनों वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकारकरेनहीं ॥ उलटा (ईक्षतेर्नाशब्दम्) इत्यादिकसूत्रोंकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनें तेसांख्यशास्त्रकल्पितप्रधानादिकपदार्थ बहुतविस्तारतैंखंडनकरयेहैं तहां (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्) ॥ इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादन करीजा मायानामा परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ सामायाशक्तिहीं ईहां श्रीभगवान्नैं अव्यक्तशब्दकरिकैकथनकरीहै ॥ और (तदैक्षत) इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजोस्रष्टव्य जगत्विषयक मायाकावृत्तिरूपईक्षणहै॥ सोईक्षणहीं ईहां श्रीभगवान्नें बुद्धिशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै॥ और ॥ (बहुस्यांप्रजायेय) ॥ इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजो तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकासंकल्पहै ॥ सोपरमेश्वरकासंकल्पहीं ईहां श्रीभगवान्नैं अहंकारशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसतैंअनंतर (तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्ध यह वेदांतपक्षहीं श्रेष्ठहै इति ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहजेपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यहजे पंच कर्मइंद्रियहैं यहदोनोंमिलिके दशइंद्रियहोवैहैं ॥ तथासंकल्पविकल्परूप जोएकमनहैं ॥ तथा तिनश्रोत्रादिकदशइंद्रियोंके जेशब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचविषयहैं ॥ तहां श्रोत्रा

दिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेतो यहशब्दादिकपंच ज्ञाप्यत्वरूपकरिकैविषयहैं और वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकेतौं तेशब्दादिकपंच कार्यत्वरूपकरिकैविषयहैं ॥ तहां पूर्व कथनकरीहुई अष्टप्रकारकी प्रकृति पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचविषय एकमन इनसर्वोंकूं सांख्यशास्त्रवाले चौवीसतत्व कहेहैं इति ॥ और सुखविषे तथासुख केसाधनोंविषे यहसुख हमारेकूंप्राप्तहोवै तथायहसुखकेसाधन हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकी स्पृहारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं शास्त्रविषे कामभीकहेहैं तथारागभी कहेहैं ताकानाम इच्छाहै॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे यहदुःख हमारेकूं मतप्राप्तहोवै तथादुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकी जा पूर्वउक्त स्पृहाका विरोधी चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूंशास्त्रविषे क्रोधभीकहेहैं तथाईर्ष्याभीकहेहै ताकानाम द्वेषहै ॥ और निरुपाधिकइच्छाकाविषयभूत तथाधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथापरमात्मसुखकाअभिव्यंजक ऐसीजा चित्तकीवृत्ति विशेषहै ताकानाम सुखहै ॥ और निरुपाधिकद्वेषकाविषयभूत तथा अधर्महैंअसाधारणकारण जिसका ऐसीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम दुःखहै॥ औरपंचमहाभूतोंकापरिणामरूप ऐसाजोइंद्रियोंसाहितशरीरहै ताकानम संघातहै॥ और स्वरूपज्ञानकाअभिव्यंजक तथाप्रमाणहैअसाधारणकारणजिसका ऐसीजा प्रमाज्ञाननामा चित्तकी वृत्तिविशेषहैताकानाम चेतनाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुए देहइंद्रियोंकेस्थितकरणेकाहेतुरूप जोप्रयत्नहै ताकानाम धृतिहै ॥ ईहां इच्छादिकोंकाग्रहण अंतःकरणकेसर्वधर्मोका उपलक्षणहै ॥ तेअंतःकरणकेधर्म श्रुतिविषेयह कहेहैं ॥तहांश्रुति ॥ (कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) ॥ अर्थयह ॥ इच्छासंकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धृति अधृति लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनरूपहींहैं इति॥ यहश्रुतिवचन मृद्घटः इसवचनकीन्यांई मनरूपउपादानकारणकेसाथि कामादिककार्योंका अभेदकथनकरिकै तिनकामा दिककार्योंविषेमनकाधर्मपणा कथनकरेहै ॥ इसप्रकार पंचमहाभूतोंतैं आदिलैके धृतिपर्यंत पूर्वकथनकऱ्येहुए जितनैंकी जडपदार्थ हैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ क्षेत्रज्ञना मासाक्षिकरिकैभास्यमानहोणेतैं तिसक्षेत्रज्ञसाक्षीतैंभिन्नहैं ॥ ऐसेयहसर्वजडपदार्थ हमनैं संक्षेपकरिकै क्षेत्र इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ तथा तेक्षेत्ररूपसर्वपदार्थ भास्यअचेतनरूपहीहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् शरीरइंद्रियोंकासंघातहीं चेतनरूपहोणेतैं क्षेत्रज्ञहै ॥ इसप्रकार लोकायतिक मानेहैं ॥ और चेतन रूपक्षणिक विज्ञान हीं आत्माहै ॥ इसप्रकार सुगत मानेहैं ॥ और इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञान यहसर्व आत्माकेलिंगहैं इसप्रकार नैयायिकमानेहैं ॥ यातैं पंचमहाभूतोंतैंआ दिलैकेधृतिपर्यंत यहसर्व क्षेत्ररूपहैं यहआपकाकहणा कैसेंसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताक्षेत्रकेलक्षणकूं कहेहै (सविकारमिति) तहां जन्मतैंआदिलैकेविनाशपर्यंत जोपरिणाम ताकानाम विकारहै ॥ तिसविकारसहितजोहोवै ताकानाम सविकारहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशादिकविकारोंवालेका नाम सविकारहै ॥ तहां पंचमहाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत जेपदार्थ पूर्वकथनकऱ्येहै ॥ तेसर्वपदार्थ सविकाररूपहैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ तिसविकारकेसाक्षी

होइसकैनहीं ॥ काहेतै आपणाउत्पत्तिविनाश आपणेकरिकैदेख्याजातानहीं ॥ और ताउत्पत्तिनाशतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकी आपणेधर्महै ॥ तिनधर्मौंकाभी आपणेदर्शनतैंविना दर्शन संभवतानहीं ॥ जिसकारणतै धर्मीकेदर्शनतैं अनंतरहीं ताकेधर्मौंकादर्शनहोवैहैं ॥ तहांजोकदाचित् आपणेकरिकैहीं आपणादर्शन मानिये ॥ तौं तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा आपणेविषेप्राप्त होवैंगा ॥ सो एकहींवस्तुविषे एकहींकालविषे एकहींक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सविकारवस्तु ताउत्पत्तिनाशादिकविकारका साक्षीहोइसकैनहीं ॥ किंतु निर्विकारवस्तुहीं तिनसर्वविकारोंकासाक्षी सिद्ध होवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ विकारीपणाहीं तिसक्षेत्रकाचिन्हहै ॥ अर्थात् जिसजिसपदार्थविषे सोविकारीपणाहै ॥ सोसोपदार्थ क्षेत्ररूपहीं जानणा ॥ कोई नामलैकेपरिगणन ताक्षेत्रकाचिन्हहैनहीं इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारक्षेत्रकेस्वरूपकाप्रतिपादनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञकूं क्षेत्रतैंभिन्नकरिकै विस्तारतैं प्रतिपादनकरणेवासतै तिसक्षेत्रज्ञकेज्ञानकीयोग्यताअर्थ श्रीभगवान् प्रथम अमानित्वादिकवीससाधनोंकूं पंचश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥ आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ अमानित्वम् । अदम्भित्वम् । अहिंसा । क्षांतिः । आर्जवम् । आचार्योपासनम् । शौचम् । स्थैर्यम् । आत्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अमानिपणा अदंभिपणा अहिंसा क्षांति आर्जव आचार्यकीउपासना शौचँ स्थैर्य आत्माकानिग्रह यहसर्व ज्ञानकेसाधन होणेतैं ज्ञानरूपहैं ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां जेगुण आपणेविषेविद्यमानहैं तथाजेगुण आपणेविषेनहींविद्यमानहैं ॥ ऐसे विद्यमानगुणोंकरिकै तथाअविद्यमानगुणोंकरिकै जाआपणीस्तुतिहै ताकानाम मानीपणाहै ॥ तामानीपणेतैं जोरहितहोणाहै ताकानाम अमानित्वहै ॥ १ ॥ और लाभपूजाख्यातिकेवासतै जो लोकोंकेआगे आपणेधर्मौंकाप्रगट करणाहै ताकानाम दंभीपणाहै ॥ तादंभीपणेतैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अदंभित्वहै ॥ २ ॥ और शरीरमनवाणीकारिकै जो प्राणीयोंकापीडनहै ताकानाम हिंसाहै ॥ ताहिंसातैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ ३ ॥ और चित्तकेक्रोधादिकविकारोंका कारणरूप जो दुष्टपुरुषोंकृत अपराधहै ताअपराधकेप्राप्त हुएभी जो निर्विकारचित्तपणेकरिकै तिसअपराधका सहनकरणाहै ताकानाम क्षांति है ॥ ४ ॥ और जैसाआपणेहृदयविषेहोवै तैसाहीबाह्यव्यवहारकरणा याप्रकारकाजो अकुटिलपणाहै ताकानाम आर्जवहै ॥ अर्थात् अन्यप्राणीयोंकीवंचनाकरणेतैंरहितहोणेकानाम आर्जवहै ॥ ५ ॥ और ब्रह्मविद्याकाउपदेश करणेहाराजो आचार्यहै ॥ तिसआचार्यका जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक पूजननमस्कारादिकोंकरिकैसेवनहै ताकानाम आचार्योपासनहै ॥ ६ ॥ और शुद्धिकानाम

शौचहै ॥ सोशौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौंबाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै ॥ तहां जलमृत्तिकाकरिकै शरीरकेमलोंका जोप्रक्षालनहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और विषयोंविषेदोषदर्शनरूप विरोधीवासनावोंकरिकै मनके रागद्वेषादिकमलोंकी जोनिवृत्तिकरणीहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ ७ ॥ और मोक्षकेसाधनोंविषे प्रवृत्तहुएपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमका नपरित्यागकरिकै जो पुनःपुनः प्रयत्नकीअधिकताहै ताकानाम स्थैर्यहै ॥ ॥ ८ ॥ और देहइंद्रियोंकासंघातरूपआत्माका मोक्षतैंप्रतिकूलविषे स्वभावतैंप्राप्तप्रवृत्तिकूं निरुद्धकरिकै जो मोक्षकेसाधनोंविषेहीं व्यवस्थापनहैं ताकानाम आत्मविनिग्रहहै ॥ ९ ॥ यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञानकेसाधनहोणेतैं ज्ञानरूपकहेहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका तथावक्ष्यमाणश्लोकोंका एकादशश्लोकके (एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तम्) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ ७ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लोक) इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥ इंद्रियार्थेषु । वैराग्यम् । अनहंकारः । एव । च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे जोवैराग्यहै तथा अहंकारतैंजोरहितपणाहै तथा जन्म मृत्यु व्याधि दुःख दोष इनसर्वोंकाजोपुनः पुनःदर्शनहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे अथवा इसलोकके तथापरलोकके विषयभोगोंविषे रागकीविरोधी जा अस्पृहारूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ १० ॥ और लोकाविषे आपणीस्तुतिके अभावहुएभी मनविषेप्रगटहुआ जो मैंसर्वतैंउत्कृष्टहूं याप्रकारकागर्वहै ताकानाम अहंकारहै॥ ताअहंकारकाजो अभावहै ताकानाम अनहंकारहै ॥ ११ ॥ और माताकेउदरविषे नवमासपर्यंतनिवासकरिकै योनिद्वारा जोबाह्य निकसणाहै ताकानाम जन्महै ॥ और प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे सर्वमर्मस्थानोंकाजोछेदनहै ताकानाम मृत्युहै ॥ और जिसअवस्थाविषे बुद्धिकीमंदता तथासर्वअंगोंकोशिथिलता तथास्वजनादिकृतपरिभव इत्यादिकदोष प्राप्त होवैहैं ताअवस्थाकानाम जराहै ॥ और ज्वरअतीसारआदिकरोगोंकानाम व्याधिहै ॥ और अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यहतीनोंउपद्रवहैंनिमित्त जिसविषे ऐसाजो इष्टवस्तुकेवियोगजन्य तथाअनिष्टवस्तुकेसंयोगजन्य चित्तकापरितापरूप परिणामविशेषहै ताकानाम दुःखहै ॥ और वात पित्त श्लेष्म मल मूत्र इत्यादिकोंकरिकैपरिपूर्ण होणेतैं जो इसशरीरविषेनिंदितपणाहै ताकानाम दोषहै ॥ ऐसे जन्मका तथामृत्युका तथाजराका तथाव्याधियोंका तथादुःखोंका तथादोषका जोअनुदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनः विचारकरिकैदेखणाहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख इनपांचोंविषे दोषका पुनः

पुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखरूपदोषका जोपुनःपुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखका तथादोषका जो पुनःपुनः दर्शनहै ॥ तहां जन्मविषेतैं माताकेउदरविषे नवमासपर्यंत अत्यंतसंकुचितहोइकैस्थितहोणा ॥ तथा माताकेमलविषेस्थितकृमियोंकरि कैदंशनहोणा ॥ तथा माताकेजठराग्निकरिकैदाहहोणा ॥ तथा जरायुचर्मकरिकैवेष्टितहोणा तथा जन्मकालविषे प्रसववायुकरिकैआकर्षणहोणा ॥ तथा अत्यंत अल्पयोनियंत्रतैंनिकसणा ॥ तथा मलमूत्रविषेस्थितहोणा इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोषताजन्मविषेहैं ॥ और मृत्यूविषेतैं सर्वनाडीयोंका आकर्षण होणा तथा मर्मस्थानोंकाछेदनहोणा ॥ तथा प्राणोंकाआकुंचनहोणा ॥ तथा ऊर्ध्वश्वासहोणे ॥ तथा अत्यंतव्यथाकरिकै मलमूत्रादिकोंकाबाह्य निकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तामृत्युविषेहै ॥ और जराअवस्थाविषेतैं सर्वअंगोंकीशिथिलताहोणी ॥ तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकी मंदताहोणी ॥ तथा शरीरविषेकंपादिकहोणे ॥ तथाकासश्वासहोणा ॥ तथा उठतेहुए नीचैपडिजाणा ॥ तथा आपणेस्वजनोंकरिकैनिरादरकूंप्राप्तहोणा ॥ तथा शरीरकेद्वारोंतै मलमूत्रलाला आदिकोंकाप्राप्तहोणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष ताजराअवस्थाविषेहैं ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंविषे तैं शरीरविषेदुर्बलताहोणी ॥ तथा शीतज्वरादिकोंकेवेगकरिकै परितापादिकहोणे ॥ तथा अत्यंतकटुकषायऔषधोंकापानकरणा ॥ तथा देहविषेदुर्गंधहोणा ॥ तथा स्वेदादिकोंकानिकसणा ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तिनव्याधियोंविषेहै ॥ तेजन्ममरणादिकोंकेदुःख तथादोष आत्मपुराणकेप्रथमअध्या यविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकथनकऱ्येहैं ॥ याप्रकारकेदुःखदोषोंकादर्शन विषयोंतैंवैराग्यकाहेतुहोणेतैं आत्मज्ञानविषे उपकारकरेहै ॥ यातैं इनअधिकारीजनोंनैंसोदुःखदोषोंकादर्शन अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ १२ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृहादिषु ॥ नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ असक्तिः । अनभिष्वंगः । पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं । च । समचित्तत्वम् । इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुत्रस्त्रीगृहादिकपदार्थोंविषे सक्तितैंरहितहोणा तथा अभिष्वंगतैंरहितहोणा तथा इष्टअनिष्टकी प्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तरहणा ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहपदार्थ हमारेहैं इतनैंअभिमानमात्रकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिहै ॥ ताकानाम सक्तिहै ॥ तिससक्तितैंरहितकानाम असक्तिहै ॥ १३ ॥ और यहपदार्थ मैंहींहूं याप्रकारकीअभेदभावनाकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिकीअतिशयताहै ॥ अर्थात् तिनपदार्थोंकेसुखीदुःखीहुए मैंहीं सुखीदुःखीहोवूंहूं याप्रकारका जोअत्यंतअभिनिवेशहै ताकानाम अभिष्वंगहै ॥ ताअभिष्वंगतैंरहितहोणेकानाम अनभिष्वंगहै ॥ १४ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सक्ति अभिष्वंग यह

दोनों किनपदार्थोंविषे परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (पुत्रदारगृहादिषुइति) हेअर्जुन पुत्रोंविषे तथास्त्रीयोंविषे तथागृहों विषे सा सक्ति तथाअभिष्वंग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ ईहां (पुत्रदारगृहादिषु) इसवचनविषेस्थितजो आदिशब्दहै ॥ ताआदिशब्दकरिकै इनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीस्नेहकेविषय धन भृत्य आदिकपदार्थहैं तिनसर्वोंकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् स्नेहकेविषयसर्वपदार्थोविषे सक्तितैंरहितहोणा तथाअभिष्वंगतैंरहितहोणा ॥ और इष्टअनिष्टकीप्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तहोणा॥ अर्थात् प्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषेतौं हर्षकूं नहींकरणा॥ और अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषे विषादकूं नहींकरणा॥ इसीकानाम समचित्तपणाहै ॥ १५ ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥ मयि । च । अनन्ययोगेन । भक्तिः । अव्यभिचारिणी । विविक्तदेशसेवित्वम् । अरतिः । जनसंसदि ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अनन्ययोगकरिकै अव्यभिचारिणी ऐसीजा मैंपरमेश्वराविषे भक्तिहै तथा एकांतदेशकासेवनहै तथा विषयीजनोंकीसभाविषे जाअप्रीतिहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवपमेश्वरविषे जाभक्तिहै॥अर्थात् यहपरमेश्वर सर्वतैंउत्कृष्टहै याप्रकारके सर्वतैंउत्कृष्टताज्ञानपूर्वक जा मेरेविषे निरतिशयप्रीतिहै ॥ कैसीहोवैसाभक्ति ॥ अनन्ययोगकरिकैअव्यभिचारिणीहोवै ॥ तहां इसभगवान्वासुदेवतैंपरे दूसराकोईहैनहीं यातैं सोभगवान्वासुदेवहीं हमारीगतिहै याप्रकारका जोनिश्चयहै ताकानाम अनन्ययोगहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै जाभक्ति अव्यभिचारिणीहै ॥ अर्थात् किसीभीप्रतिकूलहेतुनैं निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसी भक्तिभी ज्ञानकाहींहेतुहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ (प्रीतिर्नयावन्मयिवासुदेवेनमुच्यतेदेहयोगेनतावत्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकी जबपर्यंत मैंभगवान्वासुदेवविषे निरतिशयप्रीतिनहींहै ॥ तबपर्यंत यह अधिकारीपुरुष देहकेसंबंधतैंरहितहोवैनहीं इति ॥ १६ ॥ और विविक्तदेशकासेवित्वजोहै ॥ तहां जोदेश स्वभावतैंहींशुद्धहोवै ॥ अथवा संस्कारोंकरिकैशुद्धकन्याहोवै ॥ तथा अशुचिसर्पव्याघ्रादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा चित्तकीप्रसन्नता करणेहाराहोवै ॥ तादेशकानाम विविक्तदेशहै ॥ ऐसा नदीतीर पर्वतकीगुहा आदिकजोदेशहै ॥ ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम विविक्त देशसेवित्वहै ॥ १७ ॥ और आत्मज्ञानतैंविमुख तथाविषयभोगलंपटताका उपदेशकरणेहारे ऐसेजे विषयीबहिर्मुखजनहैं ॥ तिनविषयीजनोंकीजासभाहै जासभा तत्त्वज्ञानका अत्यंतप्रतिकूलहै ॥ ताविषयीपुरुषोंकीसभाविषे जो अरतिहै अर्थात् तासभाविषे जो नहींरमणकरणाहै ॥ १८ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअनुकूल

ऐसीजा महात्माजनोंकीसभाहै ॥ तिससभाविषेतौं इसअधिकारीजननैं अवश्यकरिकैप्रीतिकरणी ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (संगःसर्वात्मनाहेयःसचेत्त्यक्तुंनशक्यते ॥ ससद्भिःसहकर्त्तव्यःसतांसंगोहिभेषजम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीजननैं सर्वप्रकारकरिकै संगकापरित्यागकरणा ॥ और जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं तासंगकापरित्याग नहींकीयाजावै ॥ तौंभी इसअधिकारीजननैं विषयीबहिर्मुखपुरुषोंकासंग कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु महात्माजनोंकेसाथि सोसंगकरणा ॥ जिसकारणतैं सोमहात्माजनोंकासंग इससंसाररूपरोगकेनिवृत्तकरणेका भेषजहै इति ॥ १० ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ॥ एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् । तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतत् । ज्ञानम् । इति । प्रोक्तम् । अज्ञानम् । यत् । अतः । अन्यथा ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अध्यात्मज्ञानविषेजानिष्ठाहै तथातत्त्वज्ञानकेप्रयोजनकाजोदर्शनहै यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञान इसनामकरिकै कथनकरेहैं इनोंतें विपरीत जेमानित्वादिकहैं तेसर्व अज्ञानरूपहींहैं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आत्माकूंआश्रयणकरिकै प्रवृत्तहुआजो आत्मअनात्मविवेकज्ञानहै ताकानाम अध्यात्मज्ञानहै ॥ तिसअध्यात्मज्ञानविषेहीं जाअत्यंत निष्ठाहै ताकानाम अध्यात्मज्ञाननित्यत्वहै ॥ जिसकारणतैं तिसविवेकविषेनिष्ठावान्पुरुषहीं महावाक्यार्थज्ञानविषे समर्थहोवैहै ॥ इसकारणतैं इसअधिकारी पुरुषनैं तिसअध्यात्मज्ञानविषेनिष्ठा अवश्यकरिकैकरणी ॥ १९ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअर्थका जोदर्शनहै ॥ तहां (अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि) इत्यादिकवेदांतवाक्यहैं कारणजिसके तथाअमानित्वादिकसर्वसाधनोंकेपरिपाककाफलरूप ऐसाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकासाक्षात्कारहै ताकानाम तत्त्वज्ञानहै ॥ ऐसेतत्त्वज्ञानकाजो अर्थहै अर्थात् अविद्यादिकसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षरूपप्रयोजनहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकेमोक्षरूपअर्थका जोदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनःविचारकरिकैदेखणाहै ताकानाम तत्त्वज्ञानार्थदर्शनहै ॥ २० ॥ ऐसातत्त्वज्ञानार्थदर्शनभी इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैंकर्त्तव्यहै ॥ काहेतै तिसतत्त्वज्ञानके फलकेदर्शनहुएतैंअनंतरहीं तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ फलकेज्ञानतैंविना तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकऱ्येजेवीस २० साधनहैं ॥ तेवीससाधन आत्मज्ञानकीप्राप्तिकेहेतुरूपहोणेतैं ज्ञान इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ इनअमानित्वादिकसाधनोंतैं विपरीत जेमानित्व दंभित्व हिंसा अक्षांति अनार्जव इत्यादिकहैं ॥ तेमानित्वादिक आत्मज्ञानकेविरोधीहोणेतैं अज्ञान इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ यातैं इन अधिकारीपुरुषोंनैं तिनअज्ञाननामा मानित्वदंभित्वादिकोंकापरित्यागकरिकै तेज्ञाननामा अमानित्वअदंभित्वादिकवीससाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे

इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् अमानित्वतैंआदिलैकेतत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत पूर्वकथनकऱ्येजे ज्ञाननामा वीससाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरिकै कौंनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् षट्श्लोकोंकरिकै तिसज्ञेयवस्तुकानिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते॥१२॥ ज्ञेयं। यत्। तत्। प्रवक्ष्यामि। यत्। ज्ञात्वा। अमृतम्। अश्नुते। अनादिमत्। परं। ब्रह्म। न। सत्। तत्। न। असत्। उच्यते॥१२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन मुमुक्षुजननैं जोवस्तु जानणेंयोग्यहै सोज्ञेयवस्तु मैं तुमारेतांई कथनकरताहूं जिंसज्ञेयवस्तुकूं जानिकै यहमुमुक्षु अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु अनादिमत् परं ब्रह्म है सोब्रह्म नहींतौं सत् कह्याजावैहै तथा नहीं असत् कह्याजावैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसमुमुक्षुजननैं पूर्वउक्त अमानित्वादिकसाधनोंकरिकै जोवस्तु जानणेयोग्यहै॥सोज्ञेयवस्तुमैं भगवान् तैंअर्जुनकेतांई स्पष्टकरिकै कथनकरताहूं ॥ अब श्रीभगवान् ताश्रोताअर्जुनकूं तिसज्ञेयवस्तुकेअभिमुखकरणेवासतै उत्तमफलकरिकै ताज्ञेयवस्तुकीस्तुतिकरेहै (यज्ज्ञात्वामृतमश्नुतेइति) हेअर्जुन जिसवक्ष्यमाणज्ञेयवस्तुकूं जानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् इसअनर्थरूपसंसारतैं मुक्तहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसज्ञेयवस्तु कूंजानिकै यहअधिकारीपुरुष मुक्तहोवैहै ॥ सोज्ञेयवस्तु कैसाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् ताज्ञेयवस्तुकास्वरूप कथनकरेहै (परंब्रह्मइति) हेअर्जुन परं कहीये अतिशयतातैंरहित तथा ब्रह्मकहीये देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो परमात्मादेवहै सोपरमात्मादेवहीं ज्ञेयरूपहै ॥ अर्थात् इसमुमुक्षुजननैं पूर्वउक्तसाधनोंकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोपरब्रह्म अनादिमत्‌है ॥ तहां कारणकानाम आदिहै ॥ अथवा उत्पत्तिकानाम आदिहै ॥ सोआदि जिसवस्तुका होवै ॥ तावस्तुकानाम आदिमत्‌है ॥ ऐसेआदिमत् देहादिकपदार्थहैं ॥ तिन आदिमत्पदार्थोंतैं जो विलक्षणहोवै ॥ अर्थात् कारणतैं तथाउत्पत्तितैं रहितहोवै ॥ ताकानाम अनादिमत्‌है ॥ अर्थात् सर्वविकारोंतैंविलक्षणवस्तुकानाम अनादिमत्‌है ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अनादिमत्परम्) यहएकहींपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां कार्यकानाम आदिमत्‌है ॥ और कारणकानाम पर है॥ताकार्यकारणदोनोंतैं जोअन्यहोवै ताकानाम अनादिमत्परहै ॥ और अन्यकिसी टीकाविषेतौं (अनादि मत्परम्) याप्रकारके दोपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहां सोब्रह्मअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैं रहितहै ॥ तथा सोब्रह्म मत्परहै अर्थात् मैंसगुणब्रह्मतैंपर निर्विशेषरूपहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषेतौं (मत्परम्) इसपदका यह अर्थकऱ्याहै ॥ मैंभगवान्‌वासुदेवहूं पराशक्ति जिसकी ता

कानाम मत्परंहै ॥ सोयहव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ काहेतें जिसज्ञेयवस्तुकूंजानिके यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोज्ञेयवस्तु मैं तुमारेप्रति कथ नकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवानूनैं पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ सामोक्षकीप्राप्ति निर्विशेषशुद्धब्रह्मकेज्ञानतैंहींहोवैहै ॥ शक्तिवाले सविशेषब्रह्मकेज्ञानतें सा मोक्षकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं ईहां श्रीभगवानूनैं निर्विशेषब्रह्महीं कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेनिर्विशेषब्रह्मविषे शक्तिमत्त्वकहणा असंगतहै इति ॥ अब श्रीभगवान् ता ज्ञेयब्रह्मकीनिर्विशेषताकूं कथनकरेहै (नसत्तन्नासदुच्यतेइति) तहां जोवस्तु अस्ति इसप्रकारतें विधिमुखकरिकैंप्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोवस्तु सत् इसनाम करिकैकह्याजावैहै ॥ और जोवस्तु नास्ति इसप्रकारतें निषेधमुखकरिकै प्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोवस्तु असत् इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सोज्ञेयब्रह्म तौं निर्विशेषहै तथास्वप्रकाशचैतन्यस्वरूपहै ॥ यातैं सोब्रह्म सत् असत् दोनोंतैंविलक्षणहोणेतैं सत्‌भी नहींकह्याजावै तथाअसत्‌भी नहींकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति (यतोवाचोनिवर्त्ततेअप्राप्यमनसासह) ॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तिहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मकूंनप्राप्तहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मतैंनिवृत्तहोईजावैहै इति॥हेअर्जुन जिसकारणतें सोज्ञेयब्रह्म सत्‌नहींहै अर्थात् भावत्वधर्मकाआश्रयनहींहै॥तथा असत्‌नहींहै अर्थात् अभावत्वधर्मकाआश्रयनहींहै ॥ इसकारणतैंसोज्ञेय ब्रह्म किसीभीशब्दनैं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै कथननहींकरता॥तात्पर्ययह॥जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारो शब्दकीप्रवृत्तिकेहेतुहोवैहैं॥जैसे गौ अश्व इत्यादिकश ब्दतौं गोत्व अश्वत्व इत्यादिकजातियोंकूंलैके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और शुक्ल कृष्ण इत्यादिकशब्दतौं शुक्लनील इत्यादिकगुणोंकूंलैके आपणेआपणे अर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौं पाक पाठ इत्यादिकक्रियावोंकूंलैके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और धनी गोमान् इत्यादि कशब्दतौं स्वस्वामीभावआदिकसंबंधोंकूंलैके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ ईहां गुण क्रिया संबंध इनतीनोंतैंभिन्न जितनैंकी जातीरूपधर्महैं तथाउपाधि रूपधर्महैं तेसर्वधर्म जातिशब्दकरिकैंग्रहणकरणे ॥ तहां (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवानूनैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जातिकानिषेध कथनकऱ्याहै ॥ सोजातिकानिषेध गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै ॥ अर्थात् तिसज्ञेयब्रह्मविषे जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारोनहींहै ॥ तहां ॥ (एकमेवा द्वितीयम्)॥यहश्रुति॥तिसब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकहतीहुई ताब्रह्मविषे जातिकानिषेधकरेहै॥काहेतैं अनेकव्यक्तियोंविषेरहणेहाराजोएकधर्महै ताकूं जातिकहेहैं ॥ जैसे अनेकगौव्यक्तियोंविषेरहणेहारा जो एकगोत्वधर्महै ताकूं जातिकहेहैं ॥ ऐसीजाति एकअद्वितीयब्रह्मविषे संभवतीनहीं ॥ और (निर्गुणंनिष्क्रियंशांतम्) यह श्रुति यथाक्रमतैं तिसब्रह्मविषे गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकानिषेधकरेहै ॥ तहां निर्गुणम् इसपदकरिकैतौं गुणोंकानिषेधकरेहै और निष्क्रियम् इसपदकरिकै क्रियाकानिषेधकरेहै ॥ और शांतम् इसपदकरिकै संबंधकानिषेधकरेहै ॥ और (असंगोह्ययंपुरुषःअथात आदेशोनेतिनेति) ॥यहदोनोंश्रुतियांतौं तिसज्ञेयब्रह्मविषे

सर्वप्रपंचमात्रकानिषेधकरेहैं ।। ऐसा जातिआदिकसर्वधर्मोंतैंरहितसोनिर्गुणब्रह्म किसीभीशब्दनैं कथनकरीतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोनिर्गुणब्रह्म जोकदाचित् किसीभीशब्दकरिकै नहींकथनकऱ्याजावैहै ॥ तौं (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) अर्थयह जोज्ञेयवस्तुहै तिसकूं मैंतुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैंगा ॥ तथा ॥ (शास्त्रयोनित्वात्) अर्थयह उपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहै योनि क्या प्रमाण जिसविषे ऐसासोब्रह्महै ॥ यहव्यासभगवान्कासूत्रभीकैसे संगतहोवैंगा ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन तिसनिर्गुणब्रह्मकूं उपनिषदरूपशास्त्र जो प्रतिपादनकरेहै ॥ सो शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै प्रतिपादनकरतानहीं ॥ किंतु यथाकथंचित् लक्षणावृत्तिकरिकै सोशब्द तिसनिर्गुणब्रह्मकूं प्रतिपादनकरेहै ॥ सोप्रतिपादनकरणेकाप्रकारतौं द्वितीयअध्यायविषे (आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनम्) इसश्लोकविषे विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ॥ यातैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे शब्दकीप्रवृत्तिकेनिषेधकरणेहारे (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकेसाथि (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) इसहमारेवचनका तथा (शास्त्रयोनित्वात्) इससूत्रवचनका विरोधहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै॥ सोज्ञेयब्रह्म प्रधानपरमाणुआदिकोंकीन्यांई सत् इसनामकरिकै कह्याजावैनहीं ॥ तथा शून्यकीन्यांई असत् इसनामकरिकैभी कह्याजावैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजोनो व्योमापरोयदिति) ॥ अर्थयह ॥ इससृष्टितैंपूर्व शून्यभीनहींहोताभया ॥ तथा त्रिगुणात्मकप्रधानभी नहींहोताभया ॥ तथा परमाणुभी नहींहोतेभये ॥ तथा अव्यक्तभीनहींहोताभया इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (नसत्उच्यते) इसवचनकरिकै तिस निरुपाधिकशुद्धब्रह्मविषे सत्शब्दकी तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकी अविषयता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै यहशंकाप्राप्तहुई ॥ तिसज्ञेयब्रह्मकूं जोकदाचित् सत्शब्दका तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकाअविषयमानौंगे ॥ तौंसोब्रह्म वंध्यापुत्रशशशृंगकीन्यांई असत्हींहोवैंगा इति ॥ इसप्रकारकीशंकाकूं श्रीभगवान् (नासदुच्यते) इसवचनकरिकै सामान्यतैं निवृत्तकरताभया ॥ अब तिसीअसत्पणेकीशंकाकूं विस्तारतैंनिवृत्तकरणेवासतैं श्रीभगवान्सर्वप्राणीयोंकेश्रोत्रादिककरणरूपउपाधिद्वारा चेतनक्षेत्रज्ञरूपताकारिकै तिसज्ञेयब्रह्मकेअस्तिपणेकूं प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति ॥ १३ ॥ सर्वतःपाणिपादं । तत् । सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतःश्रुतिमत् । लोके । सर्वम् । आवृत्य । तिष्ठति ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै सर्वदेहोंविषैहैंहस्तपादजिसके तथासर्वदेहोंविषैहैंनेत्राशिरमुखजिसके तथासर्वदेहोंविषे श्रवणइंद्रियवालाहै तथासर्वप्राणीयोंकेशरीर विषैसर्वअचेतनवर्गकूं व्याप्यकरिकै स्थितहै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वेहमनैं कथनकरयाजो ज्ञेयब्रह्महै ॥ सोज्ञेयब्रह्म कैसाहै ॥ सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जे अचेतनरूप पाणिहैं तथा पादहैं ॥ तेअचेतनरूप सर्वपाणिपाद आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतनरूपक्षेत्रज्ञाननैं ॥ ताचेतनकानाम सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां लोकविषे जितनीकी अचेतनपदार्थोंकी प्रवृत्तियांहैं ॥ तेसर्वप्रवृत्तियां चेतनरूपअधिष्ठानपूर्वकहींहोवैहैं ॥ चेतनरूपअधिष्ठानतैंविना जडपदार्थोंकीप्रवृत्तिकहांभीदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदार्थोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषपूर्वकहींहोवैहै ॥ तैसे हस्तपादादिकसर्वजडपदार्थोंकीप्रवृत्तियांभी चेतनब्रह्मपूर्वकहींहोवैहैं ॥ ऐसे हस्तपादादिकसर्वजडवर्गकेप्रवर्त्तक चेतनक्षेत्रज्ञरूपब्रह्मविषे नास्तिपणेकीशंका कदाचित्भी संभवतीनहीं इति ॥ याप्रकारकीयुक्ति (सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्) इत्यादिकसर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी ॥ ईहां पाणिपाद इनदोइंद्रियोंकाग्रहण वाकादिकसर्वकर्मइंद्रियोंका उपलक्षणहै ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञेयब्रह्म सर्वतोक्षिशिरो मुखहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैंकी अक्षिहैं तथाशिरहैं तथामुखहैं ॥ तेसर्व अक्षिशिरमुख आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतोक्षिशिरोमुखहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरब्रह्म सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैंकी श्रवणइंद्रियहैं ॥ तेसर्वश्रवणइंद्रिय आपणे आपणे व्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ ईहां अक्षि श्रोत्र इनदोनोंइंद्रियोंकाग्रहण सर्वज्ञानइंद्रियोंका तथामनबुद्धिआदिकोंका उपलक्षणहै ॥ पुनःकैसाहै सोपरब्रह्म ॥ सर्वदेहोंविषे सोएकहीं नित्यविभुचेतन सर्वजडवर्गकूं अध्यासिकसंबंधकरिकै आपणेसत्तास्फूर्तिरूपतैंव्याप्यकरिकै स्थितहुआहै अर्थात् निर्विकारस्थितिकूंहीं प्राप्तहुआहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान आपणेविषेकल्पित सर्पादिकोंके गुणकरिकै तथादोषकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आपणेविषे अध्यस्तजडप्रपंचके दोषकरिकै तथागुणकरिकै सोचेतन देवलेशमात्रतैंभी बंधायमानहोवैनहीं इति ॥ तहां सर्वदेहोंविषे एकहींचेतनहै सोचेतन नित्यहै तथाविभूहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नचेतनहैनहीं ॥ यहसर्ववार्त्ता पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तहां इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं यहदोअनुमान सूचनकरे ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामनबुद्धिआदिक चतुष्टयअंतःकरण यहसर्व चेतनशक्तिनिमित्त कस्वस्वव्यापारवालेहैं स्वभावतैंजडहोणेतैं चर्ममयअथवाकाष्ठमयप्रतिमादिकोंकीन्यांई इति ॥ तथा देहइंद्रियादिकसर्व स्वभावतैंजडहैं दूसरेचेतनअधिष्ठाताकी बुद्धिपूर्वकप्रवृत्तिवालेहोणेतैं रथादिकोंकीन्यांई इति ॥ इसप्रकारतैं सर्वप्राणीयोंकेदेहइंद्रियादिकउपाधियोंकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका अस्तित्वपणानिश्चयकऱ्याजावैहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां ॥ (अध्यारोपापवादाभ्यांनिःप्रपंचंप्रपंच्यते ॥) अर्थयह ॥ शुद्धब्रह्मविषे प्रथमइससर्वप्रपंचका अध्यारोपकरिकै तिसतैंअनंतर तिससर्वप्रपंचका निषेधरूपअपवादकरिकै सोशुद्धब्रह्म श्रुति भगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं अधिकारीशिष्योंकेप्रति आत्मारूपकरिकै प्रतिपादनकरीताहैइति ॥

इसवृद्धपुरुषोंकेन्यायकूंअनुसरणकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाअध्यारोपकरिकै (अनादिमत्परंब्रह्म) इसपूर्वउक्तवचनका पूर्वलेश्लोकविषे व्याख्यानकऱ्या॥ अब तिसअध्यारोपितसर्वप्रपंचका अपवादकरिकै (नसत्तन्नासदुच्यते) इसपूर्वउक्तवचनकेव्याख्यानकरणेअर्थ श्रीभगवान् आरंभकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकेप्रति निरुपाधिकस्वरुपकेजनावणेवास्तै ॥

(मू० श्लो०) सर्वेंद्रियगुणाभासंसर्वेंद्रियविवर्जितम् ॥ असक्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच ॥ १४ ॥ सर्वेंद्रियगुणाभासम् । सर्वेंद्रिय विवर्जितम् । असक्तम् । सर्वभृत् । चँ । एँव । निर्गुणम् । गुणभोक्तृ । चँ ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सर्वइंद्रि योंतैंरहितहै तथा सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकैभासमानहै तथासर्वसंबंधतैंरहितहै तथा सर्वकेधारणकरणेहारा होहै तथासत्त्वादिक गुणोंतैंरहितहै तथा तिनसत्त्वादिकगुणोंकाभोक्ताहै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयपरब्रह्म परमार्थतैंतौ श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तथा आपणीमायाकरिकै सर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकैभासमानहै ॥ तहां बाह्यक रणरूप जेश्रोत्रवाकादिकदशइंद्रियहैं ॥ तथा अंतःकरणरूपजोमनबुद्धिहैं ॥ तिनसर्वइंद्रियोंकेजेगुणहैं ॥ अर्थात् श्रवण वचन संकल्प निश्चय इत्यादिकजेव्या पारहैं ॥ तिनसर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकै सोज्ञेयब्रह्म भासमानहोवैहै ॥ अर्थात् सोपरब्रह्म तिनसर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकै व्यापारवालेकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (ध्यायतीवलेलायतीव) ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेव ध्यानकरताकीन्यांई तथाचलायमानहुएकीन्यांई प्रती तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे ध्यायति इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजोध्यानहै सोध्यान सबज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ और लेलायति इसशब्दक रिकै कथनकऱ्याजो चलनरूपलेलायनहै ॥ सोलेलायन सर्वकर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् तिनइंद्रियोंकेतादात्म्य अध्यासतैं यहआत्मादेव मैं देखताहूं मैं श्रवणकरताहूं मैंबोलताहूं मैं चलताहूं इसप्रकारतैं तिसतिसइंद्रियकेव्यापारविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और वास्तवतैं तिनसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । अपाणिपादोजवनोगृहीता) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव वास्तवतैं चक्षुतैंरहितहुआभी देखैहै ॥ तथा वास्तवतैं श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी शब्दकूंश्रवणकरेहैं ॥ तथा वास्तवतैं हस्तइंद्रियतैंरहितहुआभी वस्तुकूंग्रहणकरेहै ॥ तथा वास्तवतैं पादइंद्रियतैंरहितहुआभी शीघ्रगमन वालाहै ॥ इति ॥ पुनःकैसाहैसोपरब्रह्म ॥ परमार्थतैंतौ सर्वसंबंधोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमात्मापु रुष सर्वसंगतैंरहितहोणेतैं असंगहै ॥ तथा यहअसंगआत्मादेव किसीभीपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकार परमार्थतैं असंगहुआभी सोपरब्रह्म

आपणीमायाशक्तिकरिकै सर्वभृत्‌है ॥ तहां लोकविषे अधिष्ठानतैंविना कोईभीभ्रमहोतानहीं ॥ किंतु रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानविषेहीं सर्परजतादिकोंकाभ्रम होवैहै ॥ यातैं जोचैतन्य आपणेसत्‌रूपकरिकै सर्वकल्पितप्रपंचकूंधारणकरेहै तथापोषणकरेहै ताकानाम सर्वभृत्‌है ॥ पुनःकैसाहैसोज्ञेयब्रह्म निर्गुणहै ॥ अर्थात् परमार्थतैंतौं सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा गुणोंकाभोक्ताहै ॥ अर्थात् शब्दस्पर्शादिकविषयद्वारा सुख दुःख मोहके आकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुएजे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैंतिनगुणोंकाभोक्ताहै तथाउपलब्धाहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव सर्वका साक्षीहै तथाचेतनहै तथाअद्वितीयहै तथासत्त्वादिकसर्वगुणोंतैंरहितहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू॰श्लोक) बहिरंतश्च भूतानामचरंचरमेवच ॥ सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचांतिकेचतत् ॥ १५ ॥ बहिः । अंतः । च । भूतानाम् । अचरं । चरम् । एव । च । सूक्ष्मत्वात् । तत् । अविज्ञेयं । दूरस्थं । च । अंतिके । च । तत् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म हीं सर्वभूतोंके बाह्यहै तथा अंतरहै तथा स्थावररूपहै तथाजंगमरूपहै तथासूक्ष्महोणेतैं अविज्ञेयहै तथा सोज्ञेयब्रह्म अत्यंतदूरस्थितहै तथा अत्यंतसमीपहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसाहै सोज्ञेयब्रह्म ॥ उत्पत्तिधर्मवाले जितनेंकी कल्पितकार्यहैं ॥ तिनसर्वकल्पितकार्योंके बाह्य तथाअंतर सोएकहीं अकल्पितअधिष्ठानरूपब्रह्मव्यापकहै ॥ अर्थात् जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंके बाह्य तथाअंतर सोरज्जुरूपअधिष्ठानहीं व्यापकहोवैहै ॥ तैसे तिन सर्वभूतोंके बाह्य तथाअंतर सोअधिष्ठानरूपब्रह्महीं सर्वप्रकारकरिकै व्यापकहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदंतरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्य बाह्यतः ॥) अर्थयह ॥ सोअधिष्ठानरूप परब्रह्महींइससर्वप्रपंचके अंतर तथाबाह्य व्यापकहै इति ॥ सर्वत्रव्यापकहोणेतैं सोपरब्रह्महीं सर्वस्थावरभूतरूपहै तथा सर्वजंगमभूतरूपहै॥काहेतैं इसलोकविषे जोजोकल्पितपदार्थहोवैहै ॥ सो अधिष्ठानतैंभिन्नसत्तावालाहोवैनहीं ॥ किंतु सोकल्पितपदार्थ अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पादिक अधिष्ठानरज्जुरूपहींहै तैसे अधिष्ठानब्रह्मविषेकल्पित यहस्थावरजंगमरूपजगत्‌भी तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्नसत्तावालानहींहै ॥ किंतुताअधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ यातैं इनस्थावरजंगमपदार्थोंकूं अधिष्ठानब्रह्मरूपता युक्तहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोज्ञेयब्रह्म जो सर्वकाआत्मारूपहै ॥ तौं सर्वप्राणी तिसपरब्रह्मकूं स्पष्टकरिकैक्युं नहींजानते ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहेहै (सूक्ष्मत्वानदविज्ञेयमिति) हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहुआभी अत्यंतसूक्ष्महोणेतैं तथारूपादिकगु

णोंतैंरहितहोणेतैं अविज्ञेयहै ॥ अर्थात् यहब्रह्म इसीप्रकारकाहींहै ॥ याप्रकारतैं स्पष्टज्ञानकेयोग्यहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंनित्यम् ॥) अर्थयह ॥ सोपरब्रह्म आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंहसूक्ष्महै तथानित्यहै इति ॥ इसीकारणतैंहीं सोपरब्रह्म विवेकवैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषोंकूं सहस्रकोटीवर्षोंकारिकैभी प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरस्थहै ॥ अर्थात् लक्षकोटीयोजनमार्गकेअंतरायवालेदेशकीन्यांई अत्यंत दूरहै ॥ और जेपुरुष तिनविवेकवैराग्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंत समीपहै ॥ तहांश्रुति (दूरात्सुदूरे तदिहांतिकेचपश्यत्स्विहैवनिहितंगुहायाम्) अर्थयह ॥ जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधननोंतैंरहितहैं ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतौं यहपरमात्मादेव अत्यंत दूरलोकालोकपर्वततैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्नहोइकै ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसे उत्तमअधिकारीपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेहीं साक्षात्कारहोवैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व त्रयोदशेश्लोकविषे (सर्वमावृत्यतिष्ठति.) इसवचनकरिकै एक हींपरमात्मादेव सर्वजडवर्गकूंव्याप्तकरिकैस्थितहुआहै यहअर्थ सामान्यतैं कथनकऱ्याथा ॥ अब तिसअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥ देहदेहविषे आत्माकेभेदमानणेहारेवादीयोंकेखंडनकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचस्थितम् ॥ भूतभर्तृचतज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥ १६ ॥ अविभक्तं । च । भूतेषु । विभक्तम् । इव । च । स्थितं । भूतभर्तृ । च । तत् । ज्ञेयं । ग्रसिष्णु । प्रभविष्णु । च ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः सोपरब्रह्म सर्वप्राणियोंविषे एकहींहै तथा भिन्नहुएकी न्यांई स्थितहै सोपरब्रह्महीं सर्वभूतोंकाधारणकरणेहारा तथा संहारकरणेहारा तथा उत्पन्नकरणेहारातुमनैं जानणा ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंविषे एकहींव्यापकहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सो परब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंविषे अग्नि गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ तैसे सोएकहींपरमात्मादेव सर्वभूतोंविषे गुह्यहोइकै रह्याहै इति ॥ इसप्रकार वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहुआभी सोपरब्रह्म इनदेहोंकेसाथि तादात्म्यकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म देहदेहविषे भिन्नभिन्न हुएकीन्यांई स्थितहै ॥ अर्थात् जैसे एकहींआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद वास्तवतैंआकाशकीएकताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं ॥ तैसे एकहींपरमात्मादेवविषे देहादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद तिसपरमात्मादेवकीवास्तवएकताकूं निवृत्त

करिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन सर्वभूतोंविषेव्यापकहोवो ॥ परंतु सर्वजगत्काकारणजोब्रह्महै सोकारणब्रह्मतौं ताक्षेत्रज्ञचेतनतैं भिन्नहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (भूतभर्तृचइति) हेअर्जुन सोब्रह्मभूतभर्तृहै ॥ अर्थात् जोब्रह्म स्थितिकालविषे अधिष्ठानतारूप करिकै सर्वभूतोंका धारणकरेहै तथापोषणकरेहै ॥ तथा जोब्रह्म प्रलयकालविषे तिनसर्वभूतोंकासंहारकरेहै ॥ तथा जोब्रह्म सृष्टिकालविषे तिनसर्वभूतोंकूं उत्पन्न करेहै ॥ जैसे रज्जुआदिकअधिष्ठान मायाकल्पितसर्पादिकोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे इससर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूपजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं सर्वदेहोंविषेएकक्षेत्रज्ञरूप तुमनैं जानणा ॥ तिसब्रह्मतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन भिन्ननहींजानणा इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वत्रविद्यमान हुआभी सोज्ञेयब्रह्म जबीनहींप्रतीतहोवैहै ॥ तबी सोज्ञेयब्रह्म जडहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ सोज्ञेयब्रह्म नहींप्रतीतहोणेमात्रकरिकै जडहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोपरब्रह्म यद्यपि स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथापि सोपरब्रह्म रूपादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मविषे नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकीअविषयता संभवहोइ सकेहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कहेहै (ज्योतिषामपितज्ज्योतिःइति) अथवा पूर्वश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलय कर्तृत्वरूपतटस्थलक्षण कथनकऱ्याथा ॥ अब (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसश्लोककरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका स्वरूपलक्षण कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ज्योतिषामपितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ॥ ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्याधिष्ठितम् ॥ १७ ॥ ज्योतिषाम् । अपि । तत् । ज्योतिः । तमसः । परम् । उच्यते । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । ज्ञानगम्यम् । हृदि । सर्वस्य । धिष्ठितम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सूर्यादिकज्योतियोंका भी ज्योति है तथाजडवर्गरूपतैं पर कह्याहै तथाज्ञानरूपहै तथाज्ञेयरूपहै तथाज्ञान करिकैप्राप्यहै तथासर्वप्राणीयोंके बुद्धिविषे स्थितहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनः सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै ॥ ज्योतियोंकाभीज्योतिहै ॥ अर्थात् अनात्मपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहारे जो आदित्य चंद्रमा अग्नि विद्युत् इत्यादिक बाह्यज्योतिहैं तथामनबुद्धिआदिक अंतरज्योतिहैं ॥ तिनसर्वज्योतियोंकाभी सोपरब्रह्म प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तहां चैतन्यज्योतिविषे सूर्यादिकजडज्योतियोंका प्रकाशकपणा युक्तिकरिकैभी संभवहोइसकेहै ॥ तथाइसअर्थकूं साक्षात्श्रुतिभगवतीभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः । तस्यभासासर्वमिदं विभाति) ॥ अर्थयह ॥ जिसस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकरिकै यहतेजयुक्तसूर्य तपायमानहोवैहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकेप्रकाशकरिकै यहसूर्यचंद्रादिकसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ तथा यहवार्ता श्रीभगवान् आपहीं (यदादित्यगतंतेजः)इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरैगा ॥ यातैं चैतन्यब्रह्मरूपज्योतिकरिकै सूर्यादिकजड

ज्योतियोंकाप्रकाश संभवैहै इति ॥शंका॥ हेभगवन् सोचैतन्यस्वरूपब्रह्म स्वभावतैंजडपणेंतैंरहितहुआभी जडपदार्थोंकेसाथि संबंधवालाहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशं काकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तमसःपरमुच्यतेइति) हेअर्जुन सोपरब्रह्म जडवर्गरूपतमतैं परकह्याहे ॥ अर्थात् अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूपयहसर्वप्रपंच यहदोनों अपारमार्थिकहैं ॥ और सोचैतन्यरूपज्ञेयब्रह्म पारमार्थिकहै ॥ ताअसत् जगत्का तथासत्ब्रह्मका कोईभीसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं श्रुतिभगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं सोज्ञेयब्रह्म अविद्याके तथाताकेकार्यरूपप्रपंचके संबंधतैंरहित कथनकऱ्याहे ॥ तहांश्रुति ॥ (अक्षरात्परतःपरः । आदित्यवर्णतमसःपरस्ता त्)॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकैनहींनाशहोणेहारी तथाआपणेकार्यकीअपेक्षाकरिकैपर ऐसीजा अविद्याहै तिसअविद्यातैंभी सोपरब्रह्मपरहे ॥ तथा सोपरब्रह्म सूर्यकीन्यांई दूसरेप्रकाशककीनहीं अपेक्षाकरताहुआ सर्वप्रपंचका प्रकाशकरेहैं ॥ तथा अविद्यारूपतमतैं परहैं इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं भी कथनकरीहे ॥ तहांश्लोक ॥ (निःसंगस्यैवसंगेनकूटस्थस्य विकारिणा ॥ आत्मनोऽनात्मनायोगोवास्तवोनोपपद्यते) ॥ अर्थयह ॥ सर्वसंगतैंरहित कूटस्थ आ त्माका संगवान् विकारी अनात्मवस्तुकेसाथि वास्तवसंबंध संभवतानहीं इति ॥ अथवा (तमसःपरमुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जड वर्गरूप तमतैंभिन्नपणा कथनकऱ्याहे ॥ ताभिन्नपणेकीसिद्धिकरणेवासतै तिसज्ञेयब्रह्मका (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसवचनकरिकै हेतुगर्भितविशेषण कथनक ऱ्याहै ॥ ताकरिकै यहअनुमान सिद्धहोवैहै ॥ सोज्ञेयब्रह्म तिसजडवर्गरूपतमतैंभिन्नहोणेकूंयोग्यहै ज्योतियोंकाभीज्योतिरूपहोणेतैं जोपदार्थ जडवर्गतैं भिन्ननहींहोवै है सोपदार्थ ज्योतियोंकाज्योतिरूपभीनहींहोवैहै जैसे घटादिकजडपदार्थहैं इति ॥ जिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्मस्वयंज्योतिरूपहै तथासर्वजडपदार्थोंकेसंबंधतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्म ज्ञानरूपहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे चंद्ररूपज्योतिका प्रकाशकरणेहारा तथाभौतिकत्वरूपकरिकैताचंद्रकेसजातीय सूर्यरूप ज्योतिहै यहवार्त्ता ज्योतिषशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे तिनसूर्यादिकज्योतियोंकाप्रकाशकरणेहारा तथातिनसूर्यादिकोंकेसजातीय कोईअलौकिकज्योतिहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुएश्रीभगवान् कहेहै (ज्ञानमिति) हेअर्जुन सो सूर्यादिकज्योतियोंकाप्रकाशकरणेहारा ज्ञेयब्रह्म कैसाहै ज्ञानरूपहै ॥ अर्थात् प्रमाणजन्य चित्तवृत्तिकरिकैअभिव्यक्त संवित्रूपहै ॥ कोई अलौकिक भौतिकज्योतिनहींहै ॥ ऐसाज्ञानरूपहोणेतैंहीं सोपरब्रह्म ज्ञेयरूपहै ॥ अर्थात् अज्ञातहोणेतैं सोपरब्रह्म अधिकारीजनोंनैं जानणेकूंयोग्यहै ॥ ताज्ञानरूपब्रह्मतैंभिन्न जडपदार्थोंविषे सोअज्ञातपणा रहैनहीं ॥ यातैं तेजडपदार्थ जानणेयोग्यनहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसाज्ञेयब्रह्म इनसर्वप्राणीयोंनैं किसवासतैनहींजानीताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (ज्ञानगम्यमिति) हेअर्जुन पूर्व अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्व ज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकऱ्येजे वीससाधनहैं ॥ जेसाधन ज्ञानकेहेतुहोणेतैं ज्ञानशब्दकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ ऐसेज्ञानरूपसाधनोंकरिकैहीं सोज्ञेयब्रह्म प्राप्त

होवैहै ॥ तिनसाधनोंतैंविना प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं अमानित्वादिकसाधनसंपन्न पुरुषहीं तिसज्ञेयब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनसाधनोंतैंरहित बहिर्मुखपुरुष तिसज्ञेयब्रह्मकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य स्वर्गादिक जैसे देशकालकरिकै व्यवहितहोवैहैं ॥ तैसे अमानित्वादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य सोज्ञेयब्रह्मभी देशकालकरिकैव्यवहितहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (हृदिसर्वस्यधिष्ठितमिति) हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म स्वर्गादिकोंकीन्यांई कोईव्यवहितनहींहै ॥ किंतु सर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषेहीं स्थितहै ॥ अर्थात् सोज्ञेयब्रह्म सामान्यतैं सर्वप्रपंचविषेस्थितहुआभी विशेषरूपकरिकै तिसबुद्धिविषेहीं जीवरूपकरिकै तथाअंतर्यामीरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे सामान्यतैंसर्वपदार्थोंविषेस्थितहुआभी सूर्यकातेज दर्पणसूर्यकांतमणि इत्यादिकस्वच्छपदार्थोविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्‌विषे सामान्यरूपतैंस्थितहुआभी सोपरब्रह्म ताबुद्धिविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंका आपणाआत्मारूपहोणेतैं वास्तवतैंअत्यंत अव्यवहितहुआभी भ्रांतिकरिकै व्यवहितकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ सोईहींज्ञेयब्रह्म तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वभ्रमकेकारणरूपअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवैहै इति ॥ १७ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्येहुएक्षेत्रादिकोंकूं तथाअधिकारीकूं तथाफलकूं कथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसपूर्वप्रसंगका उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इतिक्षेत्रंतथाज्ञानंज्ञेयंचोक्तंसमासतः ॥ मद्भक्तएतद्विज्ञायमद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥ इति । क्षेत्रं । तथा । ज्ञानं । ज्ञेयं । च । उक्तं । समासतः । मद्भक्तः । एतत् । विज्ञाय । मद्भावाय । उपपद्यते ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्र तथा ज्ञान तथा ज्ञेय संक्षेपकरिकै कथनकऱ्या मेराभक्त इनक्षेत्रादिकतीनोंकूं जानिकरिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई महाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत क्षेत्रकास्वरूप संक्षेपतैं कथनकऱ्या ॥ तथा अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत ज्ञानभी संक्षेपतैंकथनकऱ्या ॥ तथा (अनादिमत्परंब्रह्म) इसवचनतैंआदिलैके (हृदिसर्वस्यधिष्ठितम्) इसवचनपर्यंत ज्ञेयब्रह्मभी संक्षेपतैं कथनकऱ्या ॥ अर्थात् जेक्षेत्र ज्ञान ज्ञेय यहतीनों श्रुतिस्मृतियोंविषे अत्यंतविस्तारतैं कथनकऱ्येहैं ॥ तेतीनों तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंतैंआकर्षणकरिकै मंदबुद्धि पुरुषोंकेअनुग्रहवासतैं मैंपरमेश्वरनैं संक्षेपकरिकै तुमारेतांई कथनकरयेहैं ॥ इतनाहीं सर्ववेदोंकाअर्थहै तथाइसगीताशास्त्रकाअर्थहै इति ॥ तहां इसअर्थविषे पूर्व द्वादशेअध्यायविषेकथनकऱ्येहैंलक्षणजिसके ऐसाजो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोमेराभक्तहीं अधिकारीहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (मद्भक्तःइति) अर्थात्

रूपमेंगुरुरूप मैंभगवान्वासुदेवविषे समर्पणकऱ्येहैं सर्वकर्मजिसनैं तथाएकमैंपरमेश्वरकेहींशरणकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोमेराभक्तहीं इनपूर्वउक्त क्षेत्र ज्ञान ज्ञेय तीनोंकूं भलीप्रकारतैंजानिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतैयोग्यहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वअनर्थोंतैंरहित परमानंदब्रह्मभावरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ तहां परमेश्वरकीभक्तिकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहे ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथा देवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ और जैसीपरमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तैसीहीं ब्रह्मवेत्तागुरुविषेअनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ हृदयविषेप्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ और यहअधिकारी पुरुष ज्ञेयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधि कारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकारतैं ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहींहोवैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छावान् यह अधिकारीपुरुष अत्यंततुच्छविषयभोगोंकीइच्छाकापरित्यागकरिकै सर्वकालविषे एकमैंपरमेश्वरकेशरणहुआ आत्मज्ञानकेअमानित्वादिकसाधनोंकूंहीं प्रयत्नतैं संपादनकरै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तग्रंथकरिकै (तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्च) इसवचनका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (यद्विकारियतश्चयत् सचयोय त्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकरणा प्राप्तभया ॥ तहां प्रकृतिपुरुष इनदोनोंकूं संसारकाहेतुपणाकथनकरिकै (यद्विकारियतश्चयत्) इसवचनकाअर्थ (प्रकृ तिंपुरुषंचैव) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै विस्तारतैंकथनकरेहैं ॥ और (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकाअर्थतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इत्यादिकदोश्लोकों करिकै विस्तारतैंकथनकरैंगे ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायविषे क्षेत्रनामा अपराप्रकृति तथाक्षेत्रज्ञजीवनामा पराप्रकृति इनदोनोंप्रकृतियोंकूंकथनकरिकै (एतद्योनी निभूतानि) इसवचनकरिकै तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे सर्वभूतोंकीकारणता कथनकरीथी ॥ अब तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे अनादिपणा कथनकरिकै सर्वभूतोंविषे तिनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यपणेकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपि ॥ विकारांश्चगुणांश्चैवविद्धिप्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ प्रकृतिम् । पुरुषम् । च । एव । विद्धि । अनादी । उभौ । अपि । विकारान् । च । गुणान् । च । एव । विद्धि । प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रकृतिकूं तथा पुरुषकूं दोनोंकूं भी तूं अनादि हीं जान तथा विकारोंकूं तथा गुणोंकूं तौंप्रकृतितैंउत्पन्नहुआ हीं तूं जान ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन माया अज्ञान अविद्या यहहैंनाम जिसके ऐसीजा त्रिगुणात्मिका परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ जामायाशक्ति पूर्वसप्तमअध्यायविषे अष्टप्रकारकी कथनकरीथी ॥ तथा अपराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकरीथी ॥ साक्षेत्रनामा अपराप्रकृति ईहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ और पूर्वसप्तमअध्यायविषे जा क्षेत्रज्ञरूपजीवनामा पराप्रकृति कथनकरीथी ॥ साजीवनामा पराप्रकृतिहीं ईहां पुरुषशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ ऐसे प्रकृति पुरुष दोनोंकूंभी तूं अनादिहीं जान ॥ तहां नहीं विद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताकानाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप तिनदोनोंकूं तूं जान ॥ तहां (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इस श्रुतिनें तिसमायारूपप्रकृतिकूंहीं सर्वजगत्काकारणकह्याहै ॥ ऐसी सर्वजगत्केकारणरूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणा युक्तहै ॥ काहेतें जोकदाचित् तिसमायानामा प्रकृतिकूंभी अन्यकिसीकारणकीअपेक्षा मानिये ॥ तौं तिसप्रकृतिकेकारणकूंभी किसीअन्यकारणकीअपेक्षाहोवैंगी तिसअन्यकारणकूंभी किसीअन्यकारणकी अपेक्षा होवैंगी इसप्रकारतें कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैंगी ॥ यातें तामायारूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणाहीं मानणेयोग्यहै ॥ किंवा तिसमायारूपप्रकृतिविषे केवलयुक्तिकरिकैहीं सोअनादिपणा नहीं ॥ किंतु (अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां) यहसाक्षात्श्रुतिभी तिसप्रकृतिविषे अनादिपणेकूं कथनकरेहै ॥ किंवा जैसे मायारूप प्रकृतिविषेसो अनादिपणायुक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ तैसे क्षेत्रज्ञनामा जीवात्मापुरुषविषेभी सोअनादिपणा युक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ सोदिखावैहै ॥ इनसर्वप्राणीमात्रकूं जन्मकालविषेहीं हर्ष शोक भय सुख दुःख प्रवृत्ति इत्यादिक प्राप्तहोवैहैं ॥ तिनहर्षशोकादिकोंविषे इसजन्मकेतौं धर्मअधर्मसंस्कार कारणहैंनहीं ॥ किंतु तिनजीवोंकूं तेहर्षशोकादिक पूर्वजन्मके धर्मअधर्मकरिकै तथासंस्कारोंकरिकैहीं प्राप्तहोवेहैं ॥ तेधर्मअधर्मादिकधर्म आश्रयतैंविना संभवतेनहीं ॥ यातैं इसजन्मतैंपूर्वजन्मोंविषेभी ताजीवात्माकीविद्यमानता अंगीकारकरणीहोवैंगी ॥ इसप्रकारतैं धर्मअधर्मादिकोंकीआश्रयतारूपकरिकै इसजीवात्माविषे अनादिपणा सिद्धहोवैहै ॥ किंवा इसजीवात्माकूं जोकदाचित् अनादिनहींमानिये ॥ किंतु उत्पत्तिवाला मानिये ॥ तौं पूर्वकऱ्येहुएपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीं नाशहोवैंगा ॥ तथा पूर्वनहींकऱ्येहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगहोवैंगा ॥ याप्रकारके कृतनाश तथाअकृताभ्यागम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैंगे॥ तिनदोनोंदोषोंकी निवृत्तिवासतैंभी इसजीवात्माकूं अनादिहीं मान्याचहिये॥ और (अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते) इत्यादिकश्रुतियांभीतिसजीवात्माकूं अनादिहीं कथनकरेहैं इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतै सामायानामाप्रकृति अनादिहै ॥ इसकारणतैं तामायानामाप्रकृतिविषे जोपूर्व सर्वभूतोंकाकारणपणा कथनकऱ्याथा सो संभवहोइसकेहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (विकारांश्चेति) हेअर्जुन आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहजेपंचमहाभूतहैं ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन यहजे एकादशइंद्रियहैं ॥ इनषोडशोंकानाम विकारहे ॥ तथा सुख दुःख मोहरूप जे

सत्व रज तम यह तीनगुणहैं ॥ तिनषोडशविकारोंकूं तथातीनगुणोंकूं तूंतिसमायारूपप्रकृतितैंहीं उत्पन्नहुआजान इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अबतिनविकारोंविषे प्रकृतिजन्यत्वका विवेचनकरताहुआ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञपुरुषविषे संसारकाहेतुपणा दिखावैंहै ॥

(मू० श्लो०) कार्यकरणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते ॥ पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २० ॥ कार्यकरणकर्तृत्वे । हेतुः । प्रकृतिः । उच्यते । पुरुषः । सुखदुःखानां । भोक्तृत्वे । हेतुः । उच्यते ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन कार्यकरणोंकेकर्त्तापणे विषे सोप्रकृतिहीं हेतु कहीजावैहै तथा सुखदुःखोंके भोक्तापणेविषे सोपुरुषहीं हेतु कह्याजावैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां शरीरकानामकार्य है ॥ और ताशरीरविषेस्थित जे पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय मन बुद्धि चित्तयहत्रयोदशइंद्रियहैं तिनोंकानाम करणहै ॥ ईहांइसदेहकाआरंभकरणेहारे आकाशादिकपंचभूत तथाशब्दादिकपंचविषय यहसर्व ताशरीररूपकार्यकेग्रहणकरिकैग्रहणकरणे ॥ औरसुखदुःखमोहरूप सत्व रज तम यहतीनगुण तिसकरणकेआश्रितहोणेतैं ताकरणकेग्रहणकरिकै ग्रहणकरणे ॥ ऐसेकार्योंके तथाकरणोंके कर्तृत्वविषे अर्थात् तिसकार्यकरणकेआकारपरिणाम विषे महाऋषियोंनैं सामायारूपप्रकृतिहीं कारणरूपकहीहै ॥ तहां किसीपुस्तकविषे (कार्यकारणकर्तृत्वे) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठ विषेभी यहपूर्वउक्तअर्थहींजानणा ॥ इसप्रकारमायारूपप्रकृतिविषे संसारकाकारणपणा कथनकरिकै अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषविषेभी जिसप्रकारका सोकारणपणाहै ताकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै (पुरुषःइति) हेअर्जुन जोक्षेत्रज्ञरूप जीवनामापुरुष पूर्व पराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकर्‍याथा ॥ सोक्षेत्रज्ञपुरुष सुखदुःखोंके भोक्तृत्वविषे कारण कह्याजावैहै ॥ अर्थात् सुखदुःखमोहरूप सर्वभोग्यपदार्थोंके वृत्तियुक्तअनुभवविषे कारण कह्याजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कार्यकरणकर्तृत्वे) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकर्‍याहै ॥ ताक्षेत्रज्ञपुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्निकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआलोह तिसअग्निकेचतुष्कोणत्वआदिकोंका कारणहोवैहै ॥ तैसे तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे कारणहोवैहै ॥ इसप्रकार ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापणेविषे सोक्षेत्रज्ञपुरुषहीं ताप्रकृतिविषेआपणेआभासरूपछायाकीप्राप्तिकरिकै कारणहोवैहै ॥ जैसे अग्नि लोहविषेआपणीछायाकीप्राप्तिकरिकै तालोहकेदाहकर्त्तापणेविषे कारणहोवैहै ॥ तैसे सोक्षेत्रज्ञपुरुषभी ताप्रकृतिविषेआपणेछायाकीप्राप्तिकरिकै ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापणेविषे कारणहोवैहै ॥ सोदिखावैहैं ॥ कार्यपणा करणपणा कर्त्तापणा यहतीनों वास्तवतैं प्रकृतिकेविकाररूपदेहइंद्रियबुद्धिकेधर्महुएभी चेतनआत्माविषे आरोपणकर्‍येजावैहैं ॥ जैसे मैंगौरहूं मैंइसमनु

ष्यकापुत्रहूं मैंकाणाहूं मैंखंजहूं मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं देहादिकोंके कार्यत्वादिकधर्म चेतनआत्माविषेआरोपितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासरूपछायाकूंप्राप्तहुई सावुद्धिभी मैंचेतनतावालीहूं तथासुखदुःखादिकोंकूं मैं जानतीहूं इसप्रकारतैं चेतनआत्माकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ इसप्रकारका जो प्रकृतिपुरुषदोनोंविषे परस्पर धर्मोंकाअध्यासहै ॥ सोअध्यासहीं इससंसारकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै जोसांख्येयोंनें केवलपुरुषविषेहींभोक्तापणा मान्याहै सोभी खंडनहुआजानणा ॥ जोकदाचित् ऐसानहींअंगिकारकरिये ॥ किंतु प्रकृतिकूंतौं कर्त्तामानिये और पुरुषकूं भोक्तामानिये ॥ तौं कर्तृत्व भोकृत्व इनदोनोंका एकअधिकरण सिद्धनहींहोवैंगा ॥ किंतु भिन्नभिन्न अधिकरणसिद्धहोवैंगा ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और भोक्तापुरुषविषे निर्विकारपणाभी सिद्धहोवैंगानहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (पुरुषःसुखदुःखानांभोकृत्वेहेतुरुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वआपनैं क्षेत्रज्ञनामापुरुषविषे सुखदुःखकाभोक्तृत्वरूप संसारीपणा कथनकऱ्या ॥ सो तिसपुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्तहै अथवा नहींहै ॥ तहां किसीनिमित्ततैंविना जो तिसपुरुषविषेसंसारीपणा मानोंगे ॥ तौं मुक्तिकालविषेभी तिसपुरुषविषे सोसंसारीपणा होणाचाहिये ॥ इसदोषकी निवृत्तिकरणेवासतै तापुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्त अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ सोनिमित्त कौंनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तानिमित्तकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लोक) पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान् ॥ कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ पुरुषः । प्रकृतिस्थः । हि । भुंक्ते । प्रकृतिजान् । गुणान् । कारणं । गुणसंगः । अस्य । सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रज्ञपुरुष मायारूपप्रकृतिविषेस्थितहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहैं यातैं सत्असत्योनिजन्मोंविषे इसपुरुषका त्रिगुणात्मकप्रकृतिकेसाथितादात्म्यहीं कारणहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रनामापुरुष प्रकृतिविषेस्थितहुआहीं अर्थात् मायारूपप्रकृतिकेसाथि मिथ्यातादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तिनसुखदुःखादिकोंकूंअनुभवकरेहै ॥ यातैं तिसप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगकास्थानरूप जो सत्योनिविषेजन्महै तथाअसत्योनिविषेजन्महै तथासत्असत्योनिविषेजन्महै तिनजन्मोंकीप्राप्तिविषे इसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका गुणसंगहीं कारणहै ॥ अर्थात् सत्त्व रज तम यहतीनगुणात्मक मायारूपप्रकृतिविषे तिसपुरुषका तादात्म्यअभिमानहीं कारणहै ॥ ताप्रकृतिकेतादात्म्यअभिमानतैंविना तिसअसंगपुरुषकूं स्वभावतैं सोफलभोकृत्वरूपसंसार संभवतानहीं ॥ तहां इंद्रादिकदेवताशरीरतौं सत्योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनदेवताशरीरोंविषे सात्त्विकइष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥

और पशुआदिक असत्‌योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनपशुआदिकशरीरोंविषे तामसअनिष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥ और ब्राह्मणादिकमनुष्यशरीरतौं धर्म अधर्मदोनोंकरिकैमिश्रितहोणेतैं सत्‌असत्‌योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनमनुष्यशरीरोंविषे राजस इष्टअनिष्टमिश्रितफल भोग्याजावैहै इति ॥ अथवा (गुण संगः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सुखदुःखमोहरूप जेशब्दादिकविषयरूपगुणहैं ॥ तिनशब्दादिकगुणोंविषे जोइसपुरुषका अभिलाषारूपसंगहै जिसअ भिलाषारूपसंगकूं शास्त्रविषे काम इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसागुणसंगहीं इसपुरुषकूं सत्‌असत्‌योनिजन्मोंविषे कारणहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सयथाकामोभवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते ॥) अर्थयह ॥ सोपुरुष जिसवस्तुविषयक अभिलाषारूपकामवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषयकहीं निश्चयवालाहोवैहै ॥ और जिसवस्तुविषयकनिश्चयवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकीप्राप्तिवासतैहीं कर्मकूंकरैहै ॥ और जिसवस्तुकीप्राप्तिवासतै कर्मकूंकरैहै ॥ तिसीहींवस्तुकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसपक्षविषेभी तासंसारकामूलकारणरूपकरिकैतौ सो त्रिगुणात्मकप्रकृतिकाता दात्म्यअभिमानहींअंगीकारकरणा इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान्)इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै देह इंद्रिय मन इत्या दिकसंघातकानाम प्रकृतिहै ॥ ऐसीप्रकृतिविषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआहीं यहपुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखमोहरूपगुणोंकूंभोगेहै ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिसमा धिमूर्छादिकोंविषे इसपुरुषका तिसप्रकृतिविषेस्थितपणानहींहै ॥ तिसकालविषे तासुषुप्तिसमाधिमूर्च्छादिकोंविषे यहपुरुष तिनसुखदुःखादिकोंकूं प्राप्तहो वैनहीं ॥ यातैं तेसुखदुःखादिक केवल उपाधिविषेहींस्थितहैं ॥ ताउपाधिकेअभावहुए तेसुखदुःखादिक प्रतीतहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहवार्त्ताश्रु तिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ॥ अर्थयह ॥ देह श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआहीं यहआत्मा भोक्ताहोवैहै॥इसप्रकार तत्त्ववेत्तापुरुष कथनकरैहैं इति॥यहश्रुति देह इंद्रियमनकेयोगतैंही आत्माविषेभोक्तापणेकूंदिखावतीहुई केवलशुद्धआत्माविषे ताभोक्तापणेकानिषेधकरैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ देह इंद्रिय मन इत्यादिकजडपदार्थोंकासं घातरूप जाप्रकृतिहै ॥ तिसप्रकृतिविषेस्थितहुआ विद्वान् पुरुष अथवाअविद्वान्‌पुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं समानहीं भोगेहै ॥ यहवार्त्ता ब्रह्म सूत्रोंविषे श्रीभाष्यकार भगवान्‌नैंभी कथनकरीहै ॥ (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) ॥ अर्थयह ॥ व्यवहारकालविषे विद्वान्‌पुरुषकी पशुआदिकोंकेसाथि तुल्य ताहींहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे पशुआदिक इष्टवस्तुकूंदेखिकै प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ तैसे सोविद्वान्‌पुरुषभी इष्टवस्तुकूंदेखिकैतौं प्रवृत्तहोवैहै॥और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहै इति॥शंका॥हेभगवन् प्रकृतिविषेस्थितहोइकै ताप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगविषे जो विद्वान्‌पुरुषकी

तथाअविद्वान्पुरुषकी समानताहीं अंगीकारकरैंगे ॥ तौं जैसे सोविद्वान्पुरुष मुक्तहै तैसे सोअविद्वान्पुरुषभी क्युंनहींमुक्तहोता ॥ तथा जैसे सोअविद्वान्पुरुष बंधायमानहै तैसेसोविद्वान्पुरुषभी क्यूंनहींबंधायमानहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैंहै (कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसुइति) हेअर्जुन देहइंद्रियविषयरूपगुणोविषे जोइसपुरुषका संगहै ॥ अर्थात् यहमैंहूं यहमेरेहैं इसप्रकारकाजो अहंममअभिमानरूप अभिनिवेशहै ॥ सोगुणसंगहीं इसपुरुषके सत्असत् योनिजन्मोंविषे कारणहैं ॥ तहां विद्वान्पुरुषोंविषेतौं सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग हैनहीं॥ यातैं तेविद्वान्पुरुष जन्मादिकबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अविद्वान्पुरुषोंविषेतौं सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग विद्यमानहै ॥ यातैं तेअविद्वान्पुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे किसीपुरुषकेदेहविषे पिशाच प्रवेशकरेहै ॥ तहां तिसदेहविषे तापिशाचकाभीसंबंधहैं ॥ तथा तिसदेहपतिजीवकाभीसंबंधहै ॥ तिसदेहसंबंधकेसमानहुएभी जिसकालविषे सोपिशाच तिसदेहके अभिमानकूंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषेतौं सोपिशाचहीं तिसदेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैहैं ॥ सोदेहपतिजीव तादेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैनहीं ॥ और जिस कालविषे सोदेहपतिजीवहीं तिसदेहकेअभिमानकूंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषे सोदेहपति जीवहीं तिसदेहकीपीडाकरिकैपीडितहोवैहै ॥ सोपिशाच तादेहकीपीडा करिकैपीडितहोवैनहीं ॥ इसप्रकारतैं अहं ममअभिमानरूपसंगविषेहीं बंधकपणा प्रसिद्धदेखणेविषेआवैहै ॥ समीपतामात्रविषे सोबंधकपणा देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं विद्वान्पुरुषविषे तथाअविद्वान्पुरुषविषे देहसंबंधकेसमानहुएभी अहंममअभिमानरूपसंगकृत तथाता संगके अभावकृत तिनदोनोंविषे महान्विशेषताहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे प्रकृतिकेमिथ्यातादात्म्यअध्यासतैंहीं पुरुषकूं संसारकीप्राप्तिहोवैहै ताप्रकृतिकेतादात्म्यतैंविना स्वरूपतैं तापुरुषविषे सोसंसारहै नहीं यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका किसप्रकारकासोवास्तवस्वरूपहै जिसस्वरूपविषे सोसंसारनहीं संभवैहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषकेस्वरूपकूं साक्षात्दिखावताहुआ कहैहै ॥

(मू० श्लो०) उपद्रष्टानुमंताचभर्त्ताभोक्तामहेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरुषःपरः ॥ २२ ॥ उपद्रष्टा । अनुमंता । च । भर्त्ता । भोक्ता । महेश्वरः । परमात्मा । इति । च । अपि । उक्तः । देहे । अस्मिन् । पुरुषः । परः ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस देहविषे वर्त्तमानहुआभी यहपुरुष सर्वतैंभिन्नहै जिसकारणतैं यहपुरुष उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै तथा भर्त्ताहै तथा भोक्ताहै तथामहेश्वरहै तथा श्रुतिविषे परमात्मा इसनामकरिकैभी कथनकऱ्याहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसमायारूपप्रकृतिकापरिणामरूपजोयहदेहहै ॥ इसदेहविषे जीवरूपकरिकैवर्त्तमानहुआभी यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष परहै ॥ अर्थात् तिसप्रकृति

जन्यगुणोंकेसंबंधतैंरहितहै तथाआपणेस्वरूपकरिकै परमार्थतैंअसंसारीहै ॥ अब तिसपुरुषके वास्तवतैंअसंगपणेविषे श्रीभगवान् उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्माइनषट् हेतुगर्भितविशेषणोंकूंकथनकरेंहै (उपद्रष्टाइति) हेअर्जुन सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष कैसाहै उपद्रष्टाहै ॥ अर्थात् जैसे यज्ञरूपकर्मकीसिद्धिकरणे वासतै व्यापारवालेहुए जेऋत्विकहैं तथायजमानहै ॥ तिनऋत्विकयजमांनकेसमीपवर्त्ती जोकोईअन्यपुरुषहै ॥ सोअन्यपुरुष आपतिसयज्ञकेअनुकूलव्यापारतैंरहितहुआभी यज्ञविद्याविषे कुशलहोणेतैं तिनऋत्विक्यजमानकेव्यापारोंविषेस्थितगुणदोषोंकूं देखैहै ॥ तैसे यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष देहइंद्रियादिकोंके व्यापारविषे आप नहींव्यापारवालाहुआ तथातिनदेहइंद्रियादिकोंतैंविलक्षणहुआ तिनव्यापारसहितदेहइंद्रियादिकोंकूं समीपस्थितहोइकैदेखैहै ॥ सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष तिनदेहइंद्रियादिकोंकी न्यांई आपकर्त्ताहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सयत्तत्रकिंचित्पश्यत्यनन्वागतस्तेनभवत्यसंगोह्ययंपुरुषः) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेवपुरुष तिनजाग्रत्स्वप्नादिकअवस्थावोंविषे जिसजिसपदार्थकूंदेखैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मापुरुष असंगहै इति ॥ अथवा देह चक्षु मन बुद्धि आत्मा इनपांचद्रष्टावोंके मध्यविषे बाह्यदेहादिकच्यारि द्रष्टावोंकी अपेक्षाकरिकै अव्यवहितद्रष्टाजो आत्मापुरुषहै ॥ सोआत्मापुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहां उपद्रष्टा इसवचनाविषेस्थितजो उप यहशब्दहै ॥ ताउपशब्दका समीपताअर्थहै ॥ सोअव्यवधानरूप समीपताअर्थ प्रत्यक्आत्माविषेहींघटैहै ॥ अन्यकिसीअनात्मपदार्थविषे घटतानहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै उपद्रष्टाहोणेतैं ॥ जैसेयज्ञका उपद्रष्टापुरुष तायज्ञकेकर्त्ताऋत्विक्यजमानतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष अनुमंताहै ॥ अर्थात् देहइंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे आप नहींप्रवृत्तहुएभी प्रवृत्तहुएकीन्यांई समीपतामात्रकरिकै तिनोंकेअनुकूलहोणेतैं साक्षेत्रज्ञपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ अथवा आपणेआपणेव्यापारोंविषेप्रवृत्तहुए जेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं जोकदाचित्भी आपणेव्यापारतैं निवृत्तकरतानहीं ॥ सोतिनदेहइंद्रियादिकोंकासाक्षिरूपपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अनुमंतासाक्षीच उपद्रष्टानुद्रष्टानुमंतैषआत्मा ॥) अर्थयह ॥ यहआत्मादेव अनुद्रष्टाहै तथासाक्षीहै ॥ तथा यहआत्मादेव उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवाननैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै अनुमंताहोणेतैं ॥ जैसे विवादकर्त्तापुरुषतैं तटस्थपुरुष भिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष भर्त्ताहै ॥ अर्थात् चैतन्यकेआभासकरिकैयुक्त तथासंघातभावकूंप्राप्तहुए जे देह इंद्रिय मन बुद्धिहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं सोक्षेत्रज्ञ आत्मापुरुष आपणीसत्ताकरिकै तथास्फुरणकरिकै धारणकरणेहाराहै ॥ तथापोषणकरणेहाराहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नहै भर्त्ताहोणेतैं ॥

जैसे पुत्रादिकोंकाभरणकरणेहारापिता तिनपुत्रादिकोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष भोक्ताहै अर्थात् बुद्धिकीसुखदुःखमोक्षरूप जे वृत्तियां विशेषहैं ॥ तिनवृत्तियोंकूं स्वरूपचैतन्यकरिकैप्रकाशकरताहुआ यहआत्मादेव निर्विकारहुआहीं तिनसुखादिकोंका उपलब्धाहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै भोक्ताहोणेतैं जैसे देवदत्तनामाभोक्तापुरुष अन्नादिकभोज्यपदार्थोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहै सोक्षेत्रज्ञपुरुष महेश्वरहै ॥ तहां महान्होवै सोईहीं ईश्वरहोवै ताकानाम महेश्वरहै ॥ तहांसर्वकाआत्मारूपहोणेतैं सोक्षेत्रज्ञपुरुष महान् कह्याजावैहै ॥ और स्वतंत्र होणेतैं ईश्वर कह्याजावैहै ॥ अथवा जैसे चुंबकपाषाणकीसमीपताकरिकै लोह चेष्टाकरेहै ॥ तैसे जिसकीसमीपतामात्रकरिकै यहबुद्धिआदिकसर्वपदार्थ नानाप्रकारकीचेष्टाकरेहैं ॥ सोक्षेत्रज्ञआत्मा ईश्वर कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (महतोमहीयान् ईशानोभूतभव्यस्य) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव आकाशादिक महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वजगत्का प्रेरणाकरणेहारा ईशानहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा प्रकृतितैं तथाताकेकार्यतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै महेश्वरहोणेतैं जैसे महाराजा आपणीप्रजातैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष ॥ श्रुतिविषेपरमात्मा इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् अविद्याकेवशतैं आत्मत्वरूपकरिकैकल्पनाकऱ्येजे देहतैंआदिलैकेबुद्धिपर्यंत जडपदार्थहैं ॥ तिनसर्व जडपदार्थोंतैंजो उत्कृष्टहोवै ताकूं परमकहेहैं ॥ ऐसा परम जो पूर्वउक्तउपद्रष्टृत्वादिकविशेषणविशिष्ट आत्माहै ताकानाम परमात्माहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगेकथनकरैंगा ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्याहै ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै परमात्माहोणेतैं जोदेहइंद्रियादिकोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोपरमात्माभीनहींहोवैहै जैसे देहइंद्रियादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (उपद्रष्टानुमंताच) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञ तथाताक्षेत्रज्ञकाप्रभाव इनदोनोंकेवर्णनकरणेकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां क्षेत्रज्ञकास्वरूपतौं पूर्ववर्णनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै ताक्षेत्रज्ञकेप्रभावकावर्णनकरेहै ॥ (उपद्रष्टाइति) तहांपूर्वश्लोकविषे पुरुषका देहइंद्रियमनआदिकगुणोंकेसाथि जोसंगहै सोगुणसंगहीं इसपुरुषकेजन्मकाकारणहै यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तहां सोगुणसंग च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं पुरुषकानिषेधकरिकै तिसगुणमात्रकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ और दूसरा तिसपुरुषकूंअंतरभूतकरिकै तिसगुणकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ और तीसरा पुरुषकी तथातिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै सोगुणसंगहोवैहै ॥ और चौथा तिनगुणोंकीअप्रधानताकरिकै तथातापुरुषकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहैं ॥ तहां प्रथमगुणसंगविषेतौं देहइंद्रियमनआदिरूपगुणोंकेसंघातकूंहीं आत्मारूपकरिकैदेखताहुआ यहपुरुष भोक्ता कह्याजावैहै ॥ जैसे देहादिकोंकूंहीं आत्मामानणेहारे

चार्वाकादिकहैं ॥ और दूसरेगुणसंगविषेतौं तिनदेहइंद्रियादिरूपगुणोंकूंहींप्रधानहोणेतैं आत्माविषेवास्तवकर्तृत्वादिअभिमानकरिकै यहपुरुष कर्मकेफलका भर्त्ता कह्याजावैहै॥ जैसे नैयायिकआदिकहैं॥ और तीसरेगुणसंगविषेतौं आत्माकेसाथि तिनगुणोंकी समप्रधानताकारिकै गुणविषे स्थितभीभोक्तापणेकूं असंगभीआत्माविषे वस्त्रविषेभल्लातकककेअंकोंकीन्यांई यहपुरुष मानताहुआ अनुमंता कह्याजावैहै ॥ जैसे सांख्यशास्त्रवालेपुरुषहैं ॥ और चौथेगुणसंगविषेतौ सर्वप्रकारतै तिनगुणोंके धर्मोंका आत्माविषेप्रवेश नहींदेखताहुआ उदासीनबोधरूपताकरिकै तिनसर्वगुणोंकेप्रचारोंकूंदेखताहुआ यहपुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ जैसे हमवेदांतीयोंका साक्षीआत्माहै ॥ तहां पूर्वकथनकर्‍येजे भोक्ता भर्त्ता अनुमंता उपद्रष्टा यहच्यारि गुणोंकेसंगवालेहैं ॥ तिनच्यारों गुणसंगीयोंविषे उपद्रष्टातौं उत्तमहै ॥ और अनुमंता मध्यमहै ॥ और भर्त्ता अधमहै ॥ और भोक्ता अधमतैअधमहै ॥ और जोचैतन्यदेव ॥ तिनगुणोंकेसंगतैं भोक्तादिभावकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोईहींचैत न्यदेव जिसकालविषे तिनसर्वगुणोंकूंआपणेवशकरिकै क्रीडाकरेहै तिसकालविषे महेश्वर इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और जोचैतन्यदेव इसजगत्के उत्पत्ति स्थितिलयकाकर्त्ता प्रभु अंतर्यामीहै ॥ सोईहींचैतन्यदेव तिनसर्वगुणोंकापरित्यागकरिकैस्थितहुआ परमात्मा इसनामकरिकैभी कह्याजावैहै ॥ यद्यपि उपद्रष्टाभी गुणोंकापरित्यागकरिकै तिनगुणोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तथापि संघातउपहित तिसीहींउपद्रष्टाकूं दूसरेसंघातकेप्रचारकाद्रष्टापणा हैनहीं ॥ और परमात्मादेवतौं सर्वसंघातोंकेप्रचारोंकाद्रष्टाहै ॥ यातैं सर्वतैंउत्कृष्टहोणेतैं यह परमआत्माहै ॥ इसीपरमात्माकूं (उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान् आगेकथनकरेंगा ॥ तहां महेश्वर परमात्मा यहदोनोंभी गुणसंगीहींहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभ या ॥ इसदेहविषे विद्यमान तथासर्वगुणोंकूंआपणेविषेलयकरिकैस्थित ऐसाजोसर्वगुणोंतैंरहित अखंड एकरस अद्वितीयआत्माहैं ॥ सोएकआत्मादेवहीं तिस गुणसंगकरिकै उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्मा यहषट् प्रकारकाहोवैहै ॥ यहहीं इसक्षेत्रज्ञआत्माका प्रभावहै ॥ तहां अनुमंता भर्त्ता भोक्ता इनतीनरूपोंकरिकैतौं यहआत्मादेव बंधायमानहोवैहै ॥ और उपद्रष्टा महेश्वर परमात्मा इनतीनरूपोंकरिकैतौं यहआत्मादेव नित्यमुक्तएकअद्वितीयरूपहींहोवैहै इति ॥ २२ ॥ ❁ ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकर्‍या ॥ अर्थात् क्षेत्रज्ञकास्वरूप तथाताकाप्रभाव वर्णनकर्‍या ॥ अब (यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते) यहजोवचन पूर्वकथनकर्‍याथा ताका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू॰ श्लो॰) यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह ॥ सर्वथावर्त्तमानोपिनसभूयोभिजायते ॥ २३ ॥ यः। एवम्। वेत्ति। पुरुषम्। प्रकृतिं। च। गुणैः। सह। सर्वथा। वर्त्तमानः। अपि। न। सः। भूयः। अभिजायते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो

अधिकारीपुरुष ईसपूर्वउक्तप्रकारतैं क्षेत्रज्ञपुरुषकूं तथा आपणेविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृतिकूं जानेहै सोपुरुष सर्वप्रकारतैं वर्त्त
मानहुआ भी पुनः नहीं जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्रज्ञनामापुरुषकूं जानेहै ॥ अर्थात् यहसर्वत्र व्यापकपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं जोपुरुष इसक्षेत्रज्ञआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा जोपुरुष देहादिविकारोंसहित अविद्यारूपप्रकृतिकूंजानेहै ॥ अर्थात् यहदेहादिकविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृति आत्मज्ञानकरिकैबाधितहोणेतैं मिथ्याभूतहींहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै हमारा अज्ञान तथाताअज्ञानकार्यरूप प्रपंचदोनों निवृत्तहो इगएहैं ॥ इसप्रकारतै जोपुरुष तागुणसहितप्रकृतिकूंजानेहैं ॥ सोसत्त्ववेत्तापुरुष सर्वथावर्त्तमानहुआभी अर्थात् अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै वर्त्तमानहुआभीपुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् इसविद्वान्पुरुषकूं जिसशरीरविषेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहुईहै ॥ तिसशरीरकेपातहुएतैं अनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःद्वितियदेहकूंग्रहणकरैनहीं ॥ काहेतैं अविद्याकरिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकी प्राप्तिहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्यारूपका रणका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी ताअविद्याकेजन्मादिककार्योंकाभी अभावहोइजावैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ पूर्व बहुतवार कथनकरिआयेहैं ॥ किंतु पुण्यपापकर्मोंक रिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेपुण्यपापकर्म इसतत्त्ववेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ याकारणतैंभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थ यह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेपुण्यपापरूप सर्वसंचितकर्म नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसआत्मज्ञानतैंउत्तर कऱ्येहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहींनहींहोवैहै॥ यहवार्त्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहै इति ॥ ईहां (सर्वथावर्त्तमानोपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्यायसूचनकऱ्या ॥ अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघन करिकै वर्त्तमानहुआभी यहतत्त्ववेत्तापुरुष जबी पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी शास्त्रविधिकानहींउल्लंघनकरिकै आपणेश्रेष्ठआचारविषे वर्त्तमानहुआ सोत त्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां देवराजइंद्र शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै जैसे विश्वरूपनामपुरोहितकूं तथाअनेकसंन्या सियोंकूं हननकरताभयाहै ॥ सासर्ववार्ताआत्मपुराणकेद्वितियअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २३ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्ये हुएफलसहितआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकेभेदकरिकै साधनोंकेविकल्पोंकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ध्यानेनात्मनिपश्यंतिकेचिदात्मानमात्मना ॥ अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे ॥ २४ ॥ ध्यानेन । आत्मनि ।
पश्यंति । केचित् । आत्मानम् । आत्मना । अन्ये । सांख्येन । योगेन । कर्मयोगेन । च । अपरे ॥ २४ ॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअ
र्जुन केईकअधिकारीजनतौं ध्यानकरिकैहीं आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्आत्माकूं ध्यानयुक्तअंतःकरण करिकै साक्षात्कारकरैहैं और
दूसरेअधिकारीजनतौं सांख्य योगकरिकै आत्माकूं साक्षात्कारकरैहैं तथा अन्यकेईकअधिकारीजनतौं कर्मयोगकरिकै आत्माकूं
साक्षात्कारकरैहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां इसश्लोकविषे च्यारिप्रकारकेअधिकारीजनहोवैहैं ॥ तहां एकअधिकारीजनतौं उत्तम होवैहैं ॥ और दूसरेअधिकारीजन मध्यमहोवैहैं ॥ और
तीसरेअधिकारीजन मंद होवैहैं ॥ और चौथेअधिकारीजन मंदतर होवैहैं ॥ तिनच्यारोंविषे प्रथम उत्तमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान्
कथनकरैहैं ॥ (ध्यानेनइति) तहां देहादिकअनात्मपदार्थाकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोआत्मचिंतनहै ॥
जिसआत्मचिंतनकूं शास्त्रविषेनिदिध्यासनशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तथा जोआत्मचिंतन श्रवणमननकाफलरूपहै ॥ तथा जिसआत्मचिंतनकरिकै देहादिकोंविषे
आत्मत्वबुद्धिरूपविपरीतभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तानिदिध्यासनरूप आत्मचिंतनकानाम ध्यानहै ॥ ऐसेध्यानकरिकैहीं केईकउत्तमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे
प्रत्यक्चेतनरूपआत्माकूं ताध्यानयुक्तशुद्धअंतःकरणकरिकै साक्षात्कारकरैहैं इति॥ अब मध्यमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरैहैं (अन्ये
सांख्येनयोगेनइति) तहां पूर्वउक्त निदिध्यासनरूपध्यानतैं पूर्वभावी ऐसाजो श्रवणमननरूप आत्मचिंतनहै ॥ जो आत्मचिंतन नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक वैराग्य
शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंतैं उत्तर कऱ्याजावैहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन यह त्रिगुणात्मकमायाकेपरिणामरूप सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याभूतहैं
और तिनसर्वमिथ्यापदार्थोंकासाक्षीरूप नित्य विभु निर्विकार सत्य समस्तजडपदार्थोंकेसंबंधतैंरहित ऐसाजो प्रत्यक्चेतनआत्माहै सोमैंहूं इसप्रकारके वेदांतवा
क्योंकेविचारकरिकैजन्यहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगतअसंभावनाका निवर्त्तकहै ॥ ता श्रवणमननरूप आत्मचिंतनकानाम
सांख्ययोगहै ॥ ऐसेसांख्ययोगकरिकै केईकमध्यमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्आत्माकूं ताध्यानकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरैहैं इति ॥ अब तीस
रेमंदअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानके साधनकूं श्रीभगवान् कहेहै ॥ (कर्मयोगेनचापरेइति) तहां फलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवल ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकैकऱ्येहुए
ऐसेजे तिसतिसवर्णआश्रमकेउचितअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकानाम कर्मयोगहै ॥ ऐसेकर्मयोगकरिकै केईकमंदअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्

आत्माकूं अंतःकरणकीशुद्धि श्रवण मनन ध्यान इनच्यारोंकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ २४ ॥ ❁ ॥ अब चौथेमंदतरअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्यउपासते ॥ तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ अन्ये । तु । एवम् । अजानंतः । श्रुत्वा । अन्येभ्यः । उपासते । ते । अपि । च । अतितरंति । एव । मृत्युम् । श्रुतिपरायणाः ॥२५॥ (इतिपदच्छेदः)॥

हेअर्जुन पुनः अन्यअधिकारीजनतैं पूर्वउक्तउपायकरिकै आत्माकूंनहींजानतेहुए अन्यगुरुवोंतैं श्रवणकरिकै आत्माकाचिंतनकरेहैं तेअधिकारीजन भी श्रवणपरायणहुए इसैमृत्युयुक्तसंसारकूं अवश्य अतिक्रमणकरेहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ ईहां (अन्येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येहुए तीनप्रकारकेअधिकारीयोंतैं इनमंदतर अधिकारीयोंविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ साविलक्षणतादिखावैहैं ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येजे ध्यान सांख्ययोग कर्मयोग यह तीन उपायहैं ॥ तिनतीनों उपायोंविषे किसीभी उपायकरिकै आत्माकूंनहींजानतेहुएकेईकमंदतर अधिकारीजनतैं अन्यपरमकारुणिकआचार्योंतैं श्रवणकरिकै उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् तुम इसआत्माकूं इसप्रकारतैंचिंतनकरौ इसप्रकारतैं तिनकृपालुआचार्योंकरिकै उपदेशकऱ्येहुए तथातिनगुरुवोंकेवचनोंविषे अत्यंतश्रद्धावालेहुए तिसीप्रकारतैं आत्माकूंचिंतनकरेहैं ॥ तेश्रुतिपरायणपुरुषभी अर्थात् आपणीवुद्धिकरिकै ताविचारविषेअसमर्थहुएभी अत्यंतश्रद्धावान्‌ताकरिकै तागुरुकेउपदेशश्रवणमात्रपरायणहुएभी मृत्युयुक्तइससंसारकूं अवश्यकरिकै अतिक्रमणकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ध्यानविषेप्रवृत्तिकीअतिशयतातैं तिनपुरुषोंकूं चित्तकीशुद्धिवासतै कर्मोंकीभीअपेक्षाहैनहीं ॥ और वेदउक्ततत्त्वविषेदृढनिश्चयतैं तिनपुरुषोंकूं असंभावनाकीनिवृत्तिवासते श्रवणमननकीभीअपेक्षाहैनहीं इति ॥ ईहां (तेपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ जेपुरुष आप विचारकरणेविषेसमर्थनहींहैं किंतु अन्यगुरुवोंतैंश्रवणमात्रकरिकै आत्माकाचिंतनकरेहैं ॥ तेपुरुषभी जबी इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरेहैं ॥ तबी आप विचारविषेसमर्थपुरुष इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां आत्मज्ञानकरिकै जो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणीहै यहहीं तामृत्युयुक्तसंसारका अतिक्रमणहै इति ॥ ॥ २५ ॥ ❁ ॥ तहां अधिष्ठानब्रह्मकेआश्रितरहणेहारी तथाताब्रह्मकूंहींविषयकरणेहारी ऐसीजा अनिर्वचनीयअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैहीं यहसर्वसंसार उत्पन्नहुआहै ॥ यातैं ताअधिष्ठानब्रह्मकूंविषयकरणेहारी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानरूपब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्याकेनिवृत्तहुए

इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति बनिसकेहै ॥ इसअर्थकेनिश्चयकरावणेवासतै इसत्रयोदशेअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्नैं संसारका तथातासंसार केनिवर्त्तकआत्मज्ञानका दोनोंका विस्तारतैंनिरूपणकरीताहै ॥ तहां (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) यहजोवचन पूर्वकथनकर्याथा ॥ तिसवचनके अर्थकूंहीं अब श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ ॥ २६ ॥ यावत् । संजायते । किंचित् । सत्त्वम् । स्थावरजंगमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् । तत् । विद्धि । भरतर्षभ ॥२६॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतवंश विषेश्रेष्ठअर्जुन जितना कोई स्थावरजंगमरूप वस्तु उत्पन्नहोवैहै तिससर्वकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंउत्पन्नहुआ जान ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तीनलोकोंविषे कोईवस्तु स्थावररूप अथवा जंगमरूप उत्पन्नहोवैहै ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंहीं उत्पन्नहुआ जान॥ तहां अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूप जितनाकी जड अनिर्वचनीय भावअभावरूप दृश्यप्रपंचहै यहसर्व क्षेत्ररूपहै ॥ और ताक्षेत्रतैंविलक्षण तथाताक्षेत्रकाप्रकाशक तथा स्वप्रकाशपरमार्थसत् तथाअसंगउदासीन तथासर्वधर्मोंतैंरहित ऐसाजो अद्वितीयचैतन्यहै ताकानाम क्षेत्रज्ञहै ॥ ऐसे क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोनोंका जो मायाकेवशतैं परस्परअविवेकनिमित्तक सत्यअनृतमिथुनीकरणरूप मिथ्यातादात्म्यअध्यासहै ॥ यहहीं ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकासंयोगहै ॥ ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगतैंहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वकार्य उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं तूं निश्चयकर ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंहीं यहसंसार प्रतीत होवैहै ॥ तास्वरूपकेज्ञानतैं यहसंसार नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे स्वप्नादिकमिथ्यापदार्थ अधिष्ठानवस्तुकेयथार्थस्वरूपकेअज्ञानतैंहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ तास्वरूपकेज्ञानहुएतैं निवृत्तहोइजावैहैं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्यारूपसंसारकूंकथनकरिकै अब तिससंसारकीनिवृत्तिकरणेहारीब्रह्मविद्याकेकथनकरणेवासतै (यएवंवेत्तिपुरुषम्) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) समंसर्वेषुभूतेषुतिष्ठंतंपरमेश्वरम् ॥ विनश्यत्स्वविनश्यंतंयःपश्यतिसपश्यति ॥ २७॥ समम् । सर्वेषु । भूतेषु । तिष्ठंतम् । परमेश्वरम् । विनश्यत्सु । अविनश्यंतम् । यः । पश्यति । सः । पश्यति ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन नाशवान् सर्वभूतोंविषे सम तथानिर्विकाररूपतैंस्थित तथाविनाशतैंरहित तथा परमेश्वररूप ऐसेआत्माकूं जोपुरुष देखैहै सोपुरुषहीं देखैहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उत्पत्तिधर्मवाले जितनैंकी स्थावरजंगमप्राणीरूपभूतहैं ॥ कैसेहैंतेसर्वभूत ॥ अनेकप्रकारकेजन्मादिकपरिणामस्वभाववत्ताकरिकै तथागुण प्रधानभावकीप्राप्तिकरिकै विषमस्वभाववालेहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेभूत अत्यंतचंचलहैं ॥ अर्थात् क्षणक्षणविषेपरिणामीहैं ॥ तापरिणामकूंनप्राप्तहोइकै एकक्षण मात्रभी स्थितहोणेकूंसमर्थहैंनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत परस्पर बाध्यबाधकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत विनाशवान्हैं ॥ अर्थात् माया गंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टस्वभाववालेहैं ॥ जोपदार्थ देखतेदेखतेहीं नष्टहोइजावैहैं ॥ सो पदार्थ दृष्टनष्टस्वभाववाला कह्याजावैहै ॥ ऐसे सर्वस्थावरजंगमरूप भूतोंविषे आत्मादेव समहै ॥ अर्थात् सर्वत्र एकरूपहै तथासर्वदेहोंविषेएकहै ॥ तथा जोआत्मादेव तिनसर्वभूतोंविषे जन्मादिकपरिणामोंतैंरहिततकरिकै निर्वि काररूपतैंस्थितहै ॥ तथा जोआत्मादेव परमेश्वरहै ॥ अर्थात् देहादिकसर्वजडवर्गकेप्रति सत्तास्फूर्तिकाप्रदाताहोणेतैं बाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तहां नाशहोणे योग्यवस्तुकूंबाध्य कहेहैं ॥ और नाशकरणेहारेवस्तुकूं बाधक कहेहैं ॥ ऐसेबाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तथा सर्वदोषोंतैंरहितहै ॥ पुनःकैसाहैसोआत्मादेव अविनाशीहै ॥ अर्थात् मायागंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टप्राय इससर्वद्वैतकेबाधहुएभी जोबाधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवा अरेऽयमात्मा) ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव नाशतैंरहितहै इति ॥ इसरीतिसैं सर्वप्रकारकरिकै इसजडप्रपंचतैंविलक्षण जोप्रत्यक्आत्माहै ॥ तिसप्रत्यक्आत्माकूं जो अधिकारीजन वेदांतशास्त्ररूपचक्षुकरिकै सर्वजडवर्गतैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ सोईहींअधिकारीजन आत्माकूंदेखेहै ॥ जैसे जाग्रत्केबोधकरिकै स्वप्नभ्रमकूंनिवृत्त करताहुआ पुरुषहीं सम्यक्देखेहै ॥ और जोपुरुष इसप्रकारतैं आत्माकूंनहींदेखेहै ॥ सोअज्ञानीपुरुषतौं स्वप्नदर्शीपुरुषकीन्यांई भ्रांतिकरिकैविपरीतदेखताहुआभी नहींहींदेखेहै ॥ काहेतैं जोजोभ्रमहोवैहै ॥ सोसोभ्रम अदर्शनरूपहींहोवैहै ॥ भ्रमविषे दर्शनरूपता संभवतीनहीं ॥ जैसे रज्जुकूंसर्परूपकरिकै देखताहुआभी भ्रांतपुरुष यहदेखताहै याप्रकारतैंकह्याजावैनहीं ॥ किंतु यह नहींदेखताहै याप्रकारतैंहीं कह्याजावैहै ॥ काहेतैं ताकल्पितसर्पकाजोदर्शनहै सोदर्शन तारज्जुकाअदर्शनरूप हींहै ॥ तारज्जुकेअदर्शनतैं सोसर्पकादर्शन भिन्ननहींहै ॥ यातैं तासर्पकूंदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष नहींहींदेखेहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारके सर्वउ पाधियोंतैंरहित शुद्धआत्माकेदर्शनतैं साआत्माकाअदर्शनरूपअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताअविद्यारूपकारणकीनिवृत्तितैंअनंतर ताकेकार्यरूपसंसारकीभी निवृत्ति होइजावैहै ॥ ऐसाआत्मज्ञान इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ तहां इसश्लोकविषे यद्यपि श्रीभगवान्नैं (आत्मानम्) याप्रकारका आत्मा रूपविशेष्यकावाचकपद कथनकऱ्यानहीं॥तथापि जहां विशेषणवाचकपदहोवैहैं॥तहां विशेष्यवाचकपदकी अर्थतैंहींप्राप्तिहोवैहै॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकानियमहै ॥ तेविशेषणवाचकपद ईहांभी (समं तिष्ठंतं परमेश्वरम् अविनश्यंतम्) यहविद्यमानहैं ॥ यातैंआत्मारूपविशेष्यकालाभ ईहां अर्थतैंहींप्राप्तहोवैहै॥अथवा (परमेश्वरम्)

यहपदहीं ताआत्मारूपविशेष्यकावाचक जानणा इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वश्लोकउक्तआत्मदर्शनकी श्रीभगवान् फलकरिकैस्तुतिकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकी ताआत्मदर्शनविषे रुचिउत्पन्नकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमीश्वरम् ॥ नहिनस्त्यात्मनात्मानंततोयातिपरांगतिम् ॥ २८ ॥ समम् । पश्यन् । हि । सर्वत्र । समवस्थितम् । ईश्वरम् । न । हिनस्ति । आत्मना । आत्मानं । ततः । याति । परां । गतिम् ॥२८॥(इतिपदच्छेदः)॥

हेअर्जुन सर्वभूतोंविषे सम तथासमवस्थित तथाईश्वररूप ऐसेआत्माकूं देखताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतैं आत्माकरिकै आत्माकूं नहीं नहीं हननकरेहै तिसकारणतैं परम गतिकुं प्राप्तहोवैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे जोआत्मा समहै ॥ अर्थात् सर्वत्रएकरूपहै ॥ तथा जोआत्मा समवस्थितहै ॥ अर्थात् जन्मतैं आदिलैके विनाशपर्यंत सर्वभावविकारोंतैंरहितहुआ स्थितहै ॥ तथा जोआत्मा ईश्वरहै ॥ अर्थात् सर्वप्राणीयोंकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ इसप्रकारके पूर्वउक्तसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट जोआत्माहै तिसआत्माकूं देखताहुआ अर्थात् इसप्रकारकाआत्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं शास्त्रदृष्टिकरिकै तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरताहुआ यहविद्वान् पुरुष जिसकारणतैं आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं हननकरतानहीं ॥ तिसकारण तैं सोविद्वान्पुरुष परमगतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और इसलोकविषे जितनेंकी अज्ञानीजनहैं ॥ तेसर्वहीआज्ञानीजन परमार्थतैंसत्रूप तथाएकअद्वितीयरूप तथाअकर्त्ताअभोक्तारूप तथापरमानंदरूप ऐसेआत्माकूं अस्तिभातिरूपवस्तुविषेभी नास्तिनभाति इसप्रकारकीप्रतीतिकरावणेविषेसमर्थ ऐसीअविद्याकरिकै आपहीं तिरस्कारकरतेहुए नहुएजैसाकरेहैं ॥ यातैं तेसर्वअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ अथवा अविद्याकरिकै आत्मत्वरूपकरिकैग्रहणकऱ्याजो देहइंद्रियादिकोंकासंघातरूपआत्माहै ॥ तिससंघातरूपपुरातनआत्माकूं हननकरिकैपुण्यपापकर्मके वशतैं पुनः नवीनसंघातरूपआत्माकूं ग्रहणकरेहैं॥ याकारणतैंभी तेअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ यातैं दोनोंप्रकारतैं तेसर्वअज्ञानीजन आत्महत्यारेहींहै ॥ ऐसेआत्महत्यारेअज्ञानीजनोंकूं लक्ष्यकरिकैहीं यहशकुंतलाकावचनरूपस्मृति प्रवृत्तहुईहै ॥ तहांश्लोक ॥ (किंतेननकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा ॥ योऽन्यथासंतमात्मानमन्यथाप्रतिपद्यते) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष सत् चित् आनंद विभु आत्माकूं असत् जड दुःख परिच्छिन्नरूपमानेहै ॥ तिसआत्माकेअपहरणकरणेहारे चौरपुरुषनैं कौनपाप नहींकऱ्याहै ॥ किंतु तिसपुरुषनैं सर्वपापकरेहैं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (असुर्यानामतेलोकाअंधेनतमसावृत्ताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥) अर्थयह ॥ दंभदर्पादिकआसुरीसंपदावालेपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे तथा

अंधतमकरिकैआवृत्त ऐसेजे नरकादिकलोकहैं तिनलोकोंकूं तेपुरुष मरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ जेपुरुष आत्महनहैं ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जेपुरुषआत्मअभिमानकरेहैं तिनपुरुषोंकानाम आत्महनहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसाक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मअभिमानकूं शुद्धआत्माकेदर्शनकरिकै नाशकरेहै ॥ यातैं आपणेवास्तवस्वरूपकेलाभतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेआपणे आत्माकूं आपणेआत्माकरिकै नाशकरतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परागतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूं सोतत्ववेत्तापुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् शुभअशुभकर्मोंकूंकरणेहारे देहदेहविषे भिन्नभिन्नहीं आत्माहैं ॥ तथा तिसतिससुखदुःखादिरूप विचित्रफलके भोक्ताहोणेतैं तेआत्मा विषमस्वभाववालेभीहैं ॥ यातैं सर्वभूतोंविषेस्थित एकआत्माकूंसमदेखताहुआ यहपुरुष आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं नहीहननकरेहै यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानिसर्वशः ॥ यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति ॥ २९ ॥ प्रकृत्या । एव । च । कर्माणि । क्रियमाणानि । सर्वशः । यः । पश्यति । तथा । आत्मानम् । अकर्त्तारं । सः । पश्यति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मायारूपप्रकृतिनैं हीं सर्वप्रकारकरिकै सर्वकर्म करीतेहै इसप्रकार जोविवेकीपुरुष देखताहै तथा क्षेत्रज्ञआत्माकूं जो अकर्त्ता देखेहै सोईहींपुरुष सम्यक्देखताहै ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै आरंभकरणेयोग्य जेलौकिकवैदिककर्महैं ॥ तेसर्वकर्म सर्वप्रकारकरिकै प्रकृतिनैंहीं करीतेहैं ॥ अर्थात् ॥ देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारपरिणामकूंप्राप्तहुई तथासर्वविकारोंकाकारणरूपऐसीजा त्रिगुणात्मक भगवत्कीमायाहै ॥ तिसमायारूपप्रकृतिनैंहीं तेसर्वकर्म करीतेहैं ॥ सर्वविकारोंतैंशून्य क्षेत्रज्ञनामापुरुषनैं तेकर्म करीतेनहीं ॥ इसप्रकारतैं जो विवेकीपुरुष शास्त्ररूपचक्षुकरिकै देखेहै ॥ इसप्रकार तिसप्रकृतिरूपक्षेत्रनैं कऱ्येहुएजेकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंविषे जोपुरुष क्षेत्रज्ञआत्माकूं अकर्त्तारूपदेखेहै तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितदेखेहै तथाअसंगदेखेहै तथासर्वत्रएकदेखेहै तथासर्वत्रसम देखेहै सोपुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं देखताहै ॥ ऐसेआत्माकेस्वरूपकूंनजानणहारे सर्वअज्ञानीजन अंधहींहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जन्ममरणादिकविकारवालेक्षेत्रका तिसतिसविचित्रकर्मकाकर्त्तापणेकरिकै देहदेहविषे भेदहुएभी तथाविषमताहुएभी निर्विशेषअकर्त्ताआत्माकेभेदविषे तथाविषमताविषैं किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ जैसे घटमठादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित आकाशकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै तैसे निर्विशेषअकर्त्ता आत्माके भेद

विषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकवार प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व आपातवैं क्षेत्रके भेददर्शनका कथनकरिकै क्षेत्रज्ञकेभेददर्शनका निषेधकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसक्षेत्रकेभेददर्शनकूंभी माथिकत्वरूपहेतुकरिकै निषेधकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यदाभूतपृग्भावमेकस्थमनुपश्यति॥ततएवचविस्तारंब्रह्मसंपद्यतेतदा ॥ ३० ॥ यदा । भूतपृथग्भावम् । एकस्थम् । अनुपश्यति । ततः । एवं । च विस्तारं । ब्रह्म । संपद्यते । तदा ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहअधिकारिपुरुष जिसकालविषे भूतोंकेपृथक्भावकूं एकआत्माविषेस्थित देखताहै तथा तिसएकआत्मातैं हीं तिनभूतोंके विस्तारकूं देखताहै तिसकालविषे एकब्रह्महीं होवैहै ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे स्थावरजंगमरूप सर्वजडभूतोंके परस्परभिन्नत्वरूप पृथक्भावकूं एकविषेस्थित देखताहै ॥ अर्थात् एकहींसत्रूपअधिष्ठानआत्माविषे तिसभूतोंकेपृथक्भावकूं कल्पितदेखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोजोवस्तु कल्पितहोवैहै सोसोकल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तिसरज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथा जैसे कनकविषेकल्पित कुंडलकंकणादिकभूषणतिसकनकतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ तैसे सत्रूपआत्माविषेकल्पित यहसर्वभूतोंकापृथक्भावभी तिसअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर जोपुरुष आपणे स्वरूपकाविचारकरेहै ॥ अर्थात् यहसर्वजगत् आत्मारूपहीं है आत्मातैंभिन्नसत्तावाला यहजगत् नहींहै ॥ इसप्रकारतैं जोपुरुष विचारकरिकैदेखेहै ॥ इस प्रकार तिसअधिष्ठानआत्मातैं सर्वभूतोंकेअपृथक्हुएभी जोपुरुष तिसएकआत्मातैंहीं मायाकेवशतैं तिनसर्वभूतोंकेविस्तारकूंतथापृथक्भावकूं स्वप्नमायाकीन्यांई विचारकरिकैदेखेहै॥ तिसकालविषे सजातीयभेददर्शनकेअभावतैं सर्वअनर्थोतैंशून्य एकब्रह्मरूपहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥) अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं स्थावरजंगमरूपसर्वभूत आपणाआत्मारूपहींहोतेभयेहैं ॥ तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्माकेएकअद्वितीयभावकूंदेखणेहारेतिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं शोक तथामोह कदाचित्भीहोवैनहीं इति॥ तहां (प्रकृत्यैवचकर्माणि) इसपूर्वश्लोकविषेतौं श्रीभगवान्नैं क्षेत्रज्ञआत्माकेभेदका निषेधकऱ्याथा ॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौं श्रीभगवान्नैं क्षेत्ररूपआत्मपदार्थोंकेभेदकाभी निषेधकऱ्याहै ॥ इतनीं इनदोनोंश्लोकोंविषे विशेषताहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माकूं स्वभावतैं

अकर्त्तापणा हुएभीशरीरकासंबंधरूपउपाधिकरिकै कर्त्तापणा होवैंगा॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूंनिवृत्तकरताहुआ श्रीभगवान् (यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ॥ शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते ॥ ३१ ॥ अनादित्वात् । निर्गुणत्वात् । परमात्मा । । अयम् । अव्ययः । शरीरस्थः । अपि । कौंतेय । न । करोति । न । लिप्यते ॥३१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अनादिहोणेतैं तथा निर्गुणहोणेतैं यह परमात्मा अव्ययहै ऐसाआत्मा इसशरीरविषेस्थित हूआ भी नहीं करेहै नहीं लिपायनमाहोवैहै ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परमेश्वरतैंअभिन्नहोणेतैं परमात्मारूप जोयह अपरोक्ष प्रत्यक्‌आत्माहै ॥ सोयहआत्मा अव्ययहै ॥ तहां जन्ममरणादिकविकारोंकानाम व्ययहै ॥ ताविकाररूपव्ययकूं जोनहींप्रातहोवैहै ताकानाम अव्ययहै ॥ अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितवस्तुकानाम अव्ययहै ॥ सोव्ययदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं धर्मीकेस्वरूपकूंहीं उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्ययहोवैहै ॥ औरदूसरा ताधर्मीकेस्वरूपकीअनुत्पत्तिहुएभी ताकेधर्मोंकूं उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्यय होवैहै ॥ तहां श्रीभगवान् आत्माविषे प्रथमव्ययका निषेधकरेहै (अनादित्वात्इति) तहां पूर्व असत्त्वअवस्थाकानाम आदिहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जा असत्त्वअवस्थाहै ॥ साअसत्त्वअवस्थाहीं तिनघटादिकोंकी आदिहै ॥ साआदि जिसवस्तुकीनहींहोवै तावस्तुकानाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादि सर्वकालविषेसत्यआत्माहै ॥ ऐसाअनादिहोणेतैंहीं यहआत्मादेव कारणकेअभाववालाहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु तिसआदिवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकाहीं जन्महोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ तिसआदिवालेहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आत्माकी साआदिहैनहीं ॥ यातैं आत्माका जन्मभीहोवैनहीं ॥ और ताजन्मतैंपश्चात्हीं मरणपर्यंत सर्वभावविकार प्राप्तहोवैहैं ॥ ताजन्मरूपआदिविकारकेअभावहुए इसआत्मादेवकूं तेमरणपर्यंत सर्वभावविकारभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव आपणेस्वरूपतैं तिसजन्मादिविकाररूपव्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यकश्चिज्जनितानचाधिपः॥) अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवका कोईभीउत्पन्नकरणेहाराकारण नहींहै ॥ तथा तिसआत्मादेवका कोईभीअधिष्ठाता नहींहैइति ॥ अब दूसरेव्ययका निषेध करेहैं (निर्गुणत्वात्इति) हेअर्जुन यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहोणेतैंभी अव्ययहै ॥ काहेतैं इसलोकविषे जितनैंकी रूपरसादिकधर्महैं ॥ तिनसर्व धर्मोंका आपणेधर्मीकेसाथि तादात्म्यहींहोवैहै यातैं तेरूपादिकधर्म आपणेधर्मीकूं विकारभावकीनहींप्रातिकरिकै उत्पन्न वानाश होवैंनहीं ॥ किंतु आपणेधर्मीकूं

विकारभावकीप्रातिकरिकैहीं तेधर्म उत्पन्नहोवैहैं तथानष्टहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं तिनसर्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ यातैं यह आत्मादेव तिनधर्मोंकेव्यनकरिकै भी व्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवाअरेऽयमात्मानुच्छित्तिधर्मा) अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव स्वरूपतैंभी नाशादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशादिकविकारोंकरिकैभी नाशादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव जन्म अस्ति वृद्धि विपरिणाम अपक्षय विनाश इनषट्भावविकारोंतैंरहितहै इसकारणतैं यहआत्मादेव आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी तिसशरीरके प्रवृत्तहुएभी यहआत्मादेव किंचित्मात्रभी करतानहीं ॥ जैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै जलविषेस्थितहुआभी सूर्य ताजलकेचलायमानहुएभी चलायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव ताशरीरकेप्रवृत्तहुएभी किंचित्मात्रभी करता नहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभी लौकिकवैदिककर्मकूं करतानहीं ॥ तिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमान होवैनहीं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोपुरुष जिसजिसशुभअशुभकर्मकूंकरेहै ॥ सोसोपुरुषहीं तिसतिसकर्मके सुखदुःखरूपफलकरिकैलिपायमानहोवैहै ॥ तिसतिसकर्मकूंनहींकरताहुआपुरुष तिसतिसकर्मकेफलकरिकैलिपायमानहोवैनहीं ॥ और यहआत्माभीकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मके फलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तहां (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखम्) इत्यादिकवचनकरिकै तिनइच्छाद्वेषादिकोंविषे क्षेत्रकाहींधर्मपणा कथनकऱ्याहै ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानि) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंविषे मायाकाहींकार्यपणा कथनकऱ्याहै ॥ असंगआत्माका कोईधर्मनहींहै तथाकोईकार्यनहींहै॥ याकारणतैंहीं परमार्थदर्शीविद्वान्पुरुषोंकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकाअभाव पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इतनैंकरिकै आत्माविषे सर्वधर्मोंतैंरहितपणाकथनकरिकै स्वगतभेदभी निवृत्तकऱ्या ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणि) इसश्लोकविषेतौं पूर्व सजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौं पूर्व विजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (अनादित्वान्निर्गुणत्वात्) इसश्लोकविषेतौं स्वगतभेद निवृत्तकऱ्याहै ॥ यातैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद इनतीनभेदोंतैंरहितहोणेतैं अद्वितीयब्रह्मरूपहीं यहआत्माहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ तहां समानजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवृक्षविषे दूसरेवृक्षकाभेदहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे तिसीवृक्षविषे पाषाणकाभेदहै ॥ और एकहींवस्तुविषे आपणेअवयवोंकरिकैजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै ॥ जैसे तिसएकहींवृक्षविषे शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिक अवयवोंकरिकैभेदहै ॥ और (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) यहश्रुति सर्वभूतोंविषे एकहींआत्मा कहेहै ॥ ताआत्माकेसमानजातिवाला दूसराकोई आत्माहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे सजा

तीयभेद संभवैनहीं ॥ और (अतोऽन्यदार्त्तम्) यहश्रुति आत्मातैंभिन्नसर्वजगत्कूंकल्पितकहेहै ॥ और कल्पितवस्तुकी अधिष्ठानतैंभिन्नसत्ताहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे विजातीयभेदभी संभवैनहीं ॥ और (निष्कलम् निर्गुणम् निष्क्रियम् शांतम्) यहश्रुति आत्माकूं निरवयव निर्गुण निष्क्रिय कहेहै ॥ यातैं आत्माविषे स्वगतभेदभी संभवैनहीं इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ तहां शरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव आप असंगहोणेतैं तिसशरीरकेकर्मोंकरिकै लिपाय मानहोतानहीं ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तअर्थविषे दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा । सर्वगतम् । सौक्ष्म्यात् । आकाशम् । न । उपलिप्यते । सर्वत्र । अवस्थितः । देहे । तथा । आत्मा । न । उपलिप्यते ॥ ३२ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन जैसे सर्वत्रव्यापकभी आकाश असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवैहै तैसे सर्व देहोंविषे स्थितहुआभी यह आत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवैहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे घटमठतैंआदिलेके जितनैंकी दुष्ट तथाअदुष्ट मूर्तद्रव्यहैं ॥ तिनसर्वद्रव्योंविषे अंतर तथा बाह्यव्याप्यकरिकैवर्त्तमानहुआभी यह आकाश सूक्ष्महोणेतैं अर्थात् असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनमूर्त्तद्रव्योंके सुगंध दुर्गंध वर्षा आतप अग्नि धूम रज पंक इत्यादिकगुणदोषोंकरिकै लिपायमान होतानहीं ॥ तैसे देव मनुष्य पशु इत्यादिकऊचनीचसर्वदेहोंविषे अंतर बाह्य सर्वत्रव्याप्यकरिकैस्थितहुआभी यहआत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनदेहा दिकृत शुभअशुभकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (असंगोनहिसज्जते) ॥ अर्थयह ॥ यह आत्मादेव असंगहोणेतैं किसीभीवस्तुकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ किंवाइसआत्मादेवविषे केवल असंगतारूपहेतुतैंहीं अलेपतानहींहै ॥ किंतु प्रकाशकत्वरूपहेतुतैंभी इसआत्मा देवविषे सआलेपताहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३३ ॥ यथा । प्रकाशयाति । एकः । कृत्स्नम् । लोकम् । इमम् । रविः । क्षेत्रम् । क्षेत्री । तथा । कृत्स्नम् । प्रकाशयाति । भारत ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जैसे एकहीं सूर्य इस सर्व लोककूं प्रकाशकरेहै तैसे क्षेत्रज्ञनामाआत्मा इससर्व क्षेत्रकूं प्रकाशकरेहै ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे एकहींसूर्य इसरूपवान्देहादिकसर्ववस्तुवोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ परंतु तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंके धर्मोंकरिकै सोसूर्य लिपायमानहो

तानहीं ॥ तथा तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंकेभेदकरिकै सोसूर्यभेदकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे सोएकहींक्षेत्रज्ञआत्मा पूर्वउक्तसर्वक्षेत्रकूं प्रकाशकरेहै ॥ इस कारणतैंहीं सोक्षेत्रज्ञआत्मा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेधर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तथा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेभेदकरिकै सोक्षेत्रज्ञआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथाताक्षेत्रज्ञकेभेदकरिकैभेदकूंप्राप्तहोवैनहीं तिसक्षेत्रकाप्रकाश होणेतैं ॥ जो जिसवस्तुकाप्रकाशकहोवैहै ॥ सो तिसप्रकाश्यवस्तुकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथातिसप्रकाश्यवस्तुभेदकरिकैभीभेदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसेसूर्यहै इति ॥ किंवा क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकरिकैलिपायमाननहींहोवैहै यहवार्त्ताकेवलअनुमानप्रमाणकरिकैहीं सिद्धनहींहै ॥ किंतु ॥ साक्षात्श्रुतिभगवतीभी इसअर्थकूं कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सूर्योयथासर्वलोकस्यचक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मानालिप्यतेलोकदुःखेन बाह्यः ॥) अर्थयह ॥ जैसे सर्वलोककाचक्षुरूपसूर्य चक्षुके विषयरूप बाह्यपदार्थोंकेदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरणेहारा तथादेहादिकसंघाततैं भिन्न ऐसाजो सर्वभूतोंकाअंतरआत्माहै ॥ सोएकअद्वितीयआत्माभीप्रकाश्यरूपदेहादिकोंकेदुःखोंकरिकै लिपायमानहोवैनहींइति ॥ ३३ ॥ ❁ ॥

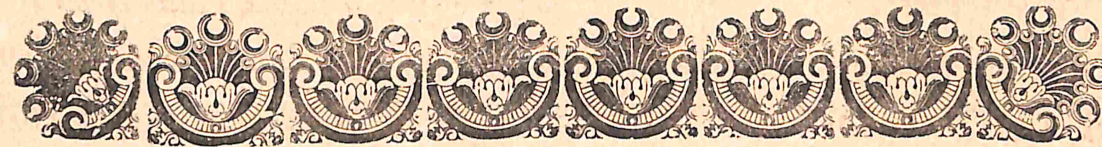
अबश्रीभगवान् इसत्रयोदशेअध्यायकेअर्थका फलसहित उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो) क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम् ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि०ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेक्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देशयोगोनामत्रयोदशोध्यायःस० ॥१३॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । एवम् । अंतरम् । ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृतिमोक्षं । च । ये । विदुः । यांति । ते । परम् ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताकूं पूर्वउक्तप्रकारतैं ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं तथा भूतोंके कारणरूपमायाकेअत्यंताभावकूं जानतेहैं तेअधिकारीपुरुष कैवल्यमुक्तिकुं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्याजोक्षेत्रहै तथाक्षेत्रज्ञहै ॥ तिनदोनोंके विलक्षणताकूं जेपुरुष ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं अर्थात् यहक्षेत्रतौ जडहै तथाकर्त्ताहै तथाविकारीहैं तथापरिच्छिन्नहै॥और यहक्षेत्रज्ञआत्मातौ चेतनहै तथाअकर्त्ताहै तथाअविकारीहै तथाअपरिच्छिन्नहै ॥इसप्रकारकी दोनोंकीविलक्षणताकूं जेअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशजन्यआत्मज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तथाजेअधिकारीपुरुष भूतप्रकृतिकेमोक्षकूं जानतेहैं ॥ तहां आकाशादिकसर्वभूतोंकाकारणरूप जा माया अविद्या अज्ञान इत्यादिकनामोंवाली परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ जिसमायाशक्तिकूं (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥

तामायाशक्तिकानाम भूतप्रकृतिहै ॥ ताभूतप्रकृतिकी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकी परमार्थभूतआत्मविद्याकरिकै आत्यंतिकनिवृत्तिहै ताकानाम भूतप्रकृतिमोक्षहै ॥ ऐसेभूतप्रकृतिमोक्षकूंभी जेअधिकारीपुरुष तिसज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं परमार्थआत्मवस्तुस्वरूप कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसी कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोइकै तेअधिकारीजन पुनःदेहकूंग्रहणकरैंनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा पूर्वउक्त क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताज्ञानवालाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूंहीं सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिकरिकै परमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं परमपुरुषार्थकीइच्छावान् पुरुषनैं तेअमानित्वादिकसाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे ॥ तथा सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकाविवेकज्ञान अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ ३४ ॥ ❁ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायांत्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति त्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वत्रयोदशेअध्याय विषे (यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ) इसश्लोककरिकै श्रीभगवानूनैं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैं सर्वस्थावरजंगम भूतोंकीउत्पत्ति कथनकरीथी॥ तहां ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरसांख्यमतकाखंडनकरिकै ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूंईश्वरकेआधीनपणा अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा तिसत्रयोदशेअध्यायविषे (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) इसवचनकरिकै श्रीभगवानूनैं गुणोंकेसंगकूंहीं जन्मकाकारण कह्याथा ॥ तहां किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुण कौंनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसजीवकूं बंधायमानकरेहैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा (भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवानूनैं भूतप्रकृतिकेमोक्षका कथनकऱ्याथा ॥ तहां भूतप्रकृतिनामवालेसत्त्वादिकगुणों तैं इसअधिकारीपुरुषका किसप्रकारकरिकैमोक्षहोवैहै ॥ तथातिंसमुक्तहुएपुरुषकेकौंनलक्षणहैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्याचाहिये ॥ इससर्वअर्थकूं विस्तारतैं कहणेवासतैं श्रीभगवानूनैं यहचतुर्दशअध्याय प्रारंभकरीताहै ॥ तहां श्रोतापुरुषोंकीरुचिउत्पन्नकरणेवासतै श्रीभगवान् आगेवक्ष्यमाणअर्थकी दोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकरताहुआ कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ परंभूयःप्रवक्ष्यामिज्ञानानांज्ञानमुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वामुनयःसर्वेपरांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥

परं । भूयः । प्रवक्ष्यामि । ज्ञानानां । ज्ञानम् । उत्तमं । यत् । ज्ञात्वा । मुनयः । सर्वे । परां । सिद्धिम् । इतः । गताः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ज्ञानसाधनोंकेमध्यमैं उत्तम तथाश्रेष्ठ ऐसेज्ञानसाधनकूं मैंभगवान् पुनःभी तुमारेप्रति कथनकरताहूं जिससाधनकूं अनुष्ठानकरिकै सर्व मुनि इसदेहबंधनतैं परम कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (ज्ञायतेऽनेनेतिज्ञानम्) अर्थयह ॥ जिससाधनकरिकै आत्मवस्तु जान्याजावैहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ईहां ज्ञानशब्द परमात्माविषयकज्ञानकेसाधनका वाचकहै ॥ कैसाहैसोज्ञान परहै ॥ अर्थात् परमात्मरूपपरवस्तुविषयकहोणेतैं श्रेष्ठहै ॥ पुनःकैसाहै सोज्ञान ज्ञानोंकेमध्यविषे उत्तम है ॥ अर्थात् (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इसश्रुतिनैं विधानकऱ्येजे यज्ञदानादिक ज्ञानकेबहिरंगसाधनहैं ॥ तिनसर्वबहिरंगसाधनोंकेमध्यविषे उत्तमफलकाहेतुहोणेतैं उत्तमहै॥ कोईपूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकेमध्यविषे सोज्ञान उत्तमनहींहै ॥ काहेतैं तेअमानित्वादिकसाधनभी अंतरंगसाधनहोणेतैं उत्तमफलकेहींहेतुहैं॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिकैतौं तिसज्ञानविषे उत्कृष्टवस्तुविषयकत्व कथनकऱ्या ॥ और (उत्तमम्) इसविशेषणकरिकैतौं